चन्दामामा
जून १९६८
75 P

Chandamama
Press
VADAPALANI
MADRAS-26
OFFERS YOU...
FINEST PRINTING.-
Equipped with
PHOTO GRAVURE
KLIMSCH CAMERA
VARIO KLISCHOGRAPH-
-BLOCK MAKING
and a
host of Others....

चन्दामामा

जून १९६८

संपादकीय	१	बोलनेवाला तोता	२९
भारत का इतिहास	२	नाभाग	३१
भूतों के साथ व्यापार	५	दिन अच्छे हो, तो	३३
शिथिलालय (धारावाहिक)	९	विष्णु की माया	३८
जादू की बीमारी	१७	झूठी गवाही	४१
सुल्तान का फ़ैसला	२३	उधार वसूली	४५
पिशाचों का रसोइया	२६	कृष्णावतार	४९

कोलगेट से दिनभर दुर्गंधमय श्वास से मुक्त रहिए और दन्त-क्षय को रोकिए !

क्योंकि: एक ही बार ब्रश करने से कोलगेट डेन्टल क्रीम ८५ प्रतिशत दुर्गन्ध प्रेरक और दंत क्षयकारी जीवाणुओंको दूर कर देता है।

वैज्ञानिक परीक्षणों से सिद्ध हो गया है कि कोलगेट १० में से ७ मामलों में दुर्गन्धमय सांस को तत्काल दूर कर देता है और खाना खाने के तुरन्त बाद कोलगेट विधि से ब्रश करने पर दन्त चिकित्सा के समस्त इतिहास में पहले के किसी भी समय की तुलना में अधिक व्यक्तियों का अधिक दन्त-क्षय दूर होता है। केवल कोलगेट के पास ही यह प्रमाण है।
बच्चे कोलगेट से अपने दांतों को नियमित रूप से ब्रश करने की आदत आसानी से पकड़ लेते हैं क्योंकि इसकी देर तक रहने वाली पिपरमेंट जैसी खुशबू उन्हें प्यारी होती है।

यदि आपको पाउडर पसंद हो तो कोलगेट टूथ पाउडर से भी ये सभी लाभ मिलेंगे ... एक डिब्बा महीनों तक चलता है।

नियमित रूप से कोलगेट द्वारा ब्रश कीजिये ताकि इससे आपकी सांस अधिक साफ़ और ताजा तथा दांत अधिक सफ़ेद हों।

...सारी दुनिया में अधिक से अधिक लोग किसी दूसरी तरह के डेंटल क्रीम के बदले कोलगेट ही खरीदते हैं।

बग़ैर बच्चों के घर कैसा
बग़ैर हंसी-खुशी के बच्चे कैसे
बग़ैर पैरी की मिठाइयों के हंसी आये कैसे

वाह...पैरी की मिठाइयां देखते ही मुंह में पानी आ जाता है। कितना पुष्टिकर और स्वादिष्ट है यह। बच्चों को दीजिये और आप भी खाइये देखिये फिर ज़िन्दगी में कितनी रौनक आ जाती है। क्या आपने नई किस्मों को चख कर देखा है? ऑरेंज रोल्स—ब्लैक करेन्ट्स—पाइनऐप्पल टॉफी—क्रीमी रोल्स।

पैरीज़—
उच्चकोटि की
मिठाइयां बनानेवाले

PRS 4415

पैरीज़ कन्फेक्शनरी लिमिटेड, मद्रास

LIFEBUOY
for health

चन्दामामा

संचालक: चक्रपाणी

'जादू की बीमारी' (बेताल कथा) से हमें यह विदित होता है कि स्वार्थ के हेतु दग़ा देने का परिणाम बड़ा भयंकर होता है।

'सुलतान का फ़ैसला' नामक कहानी में एक विचित्र रहस्य छिपा हुआ है। यदि कोई दुष्ट व्यक्ति अपराध करता है तो सुलतान उससे दूसरा भी अपराध करने देता है और जो अन्याय का शिकार होता है, उसकी और अधिक भलाई करता है। सुलतान की दूर-दर्शिता पर पाठक मुग्ध रह जाते हैं।

वर्ष: १९ जून १९६८ अंक: १०
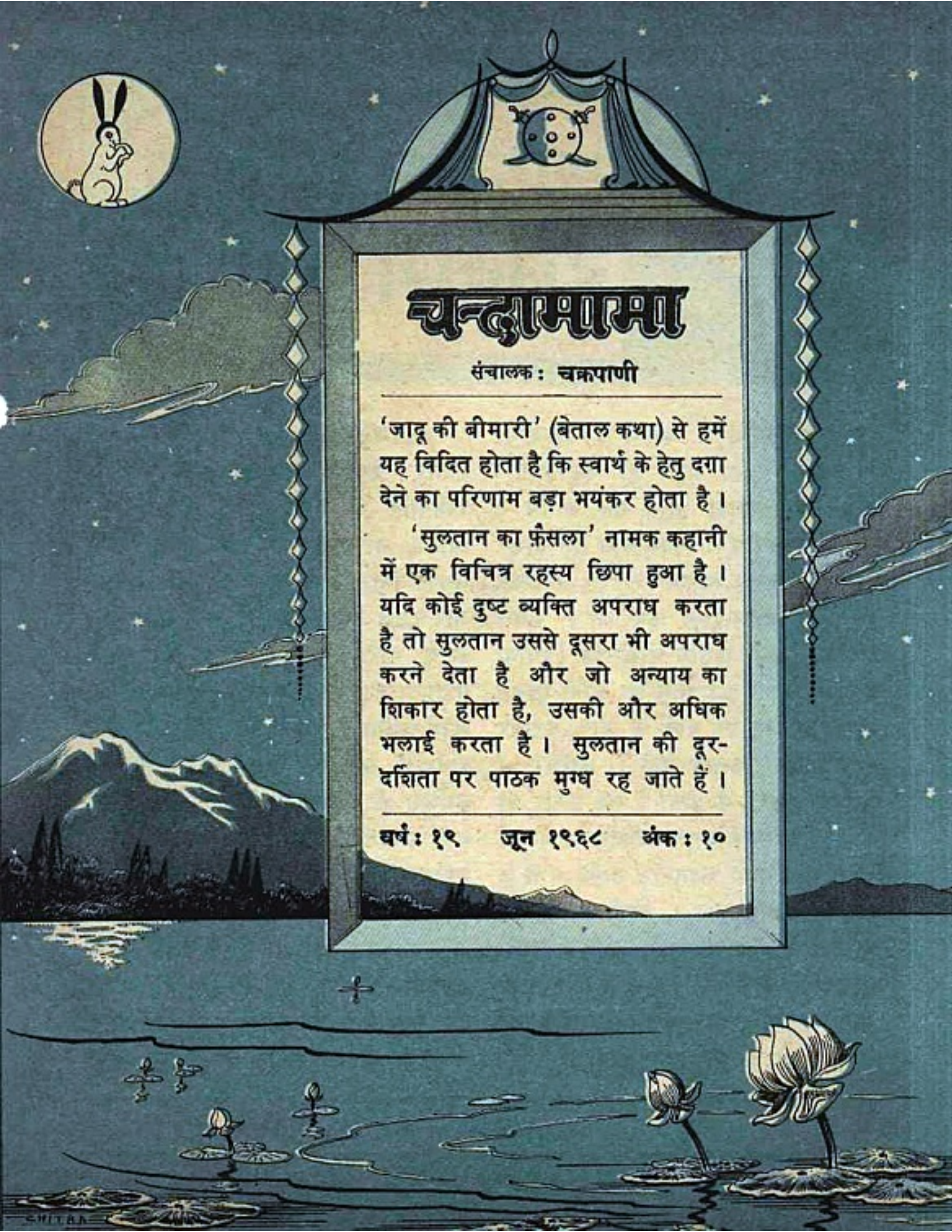
नाना फ़डनवीस के ज़माने में महाराष्ट्रों की प्रतिष्ठा बहुत ही बढ़ गयी। लेकिन वह ज़्यादा समय तक क़ायम न रही। फ़डनवीस के नियंतृत्व से तंग आकर पेशवा माधवराव नारायण ने २५ अक्टोबर १७९५ में आत्म-हत्या कर ली। उसके बाद का पेशवा द्वितीय बाजीराव (रघोबा का पुत्र) नाना फ़डनवीस का जानी दुश्मन था। इसलिए उन दोनों के बीच बराबर चाल-बाज़ियाँ चलती रहीं। आख़िर ४ दिसंबर १७९६ में दोनों में एक प्रकार की संधि हुई। इसके अनुसार द्वितीय बाजीराव पेशवा और नाना फ़डनवीस उसके मंत्री के रूप में निश्चय हुआ। बाजीराव द्वितीय युद्ध-तंत्र में होशियार नहीं, लेकिन चाल-बाज़ियाँ करने में बड़ा प्रवीण है। इसलिए उसने महाराष्ट्र के नेताओं के बीच जो मनमुटाव थे, उनको भड़का दिया।

२६ अप्रैल १७९८ को लार्ड वेलस्ली गवर्नर जेनरल बनकर आया। वह राजनीति में बड़ा प्रवीण था। उसने ब्रिटिश साम्राज्य की रक्षा करना और उसका विस्तार करना अपना लक्ष्य बनाया और इसके अनुसार अपनी नीति बना ली। उसने भारत के कई राज्यों को फ़ौजी सहायता का लोभ देकर, कुछ प्रान्तों को अपने अधीन में रखने और फ़ौज के पीछे होनेवाले खर्च को वसूल करने की भी कोशिश की। निज़ाम जैसे कमज़ोर शासक बड़ी आसानी से उसके जाल में फँस गये। महाराष्ट्रों ने वेलस्ली के पत्र का जवाब तक न दिया।

१३ मार्च १८०० में पूना में नाना फ़डनवीस की मृत्यु हुई जिससे अंग्रेजवालों को महाराष्ट्र में दखल देने का मौक़ा मिला। नाना फ़डनवीस के मन में अंग्रेज़ों

के प्रति आदर का भाव ज़रूर था, लेकिन राजनैतिक दृष्टि से उनको खतरनाक मानता था। नाना फ़डनवीस की मौत से महाराष्ट्र के नेताओं के बीच मनमुटाव काफ़ी बढ़ गया। पूना की गद्दी के लिए दौलतराव सिंधिया (महदाजी का दत्तक पुत्र) और जसवंतराव होल्कर (तुकोजी का पुत्र) के बीच झगड़ा शुरू हुआ। मालवा के पास सिंधिया जब होल्कर की फ़ौज के साथ लड़ रहा था, तब पेशवा ने जसवंतराव के भाई विठूजी की हत्या की। इससे गुस्से में आकर जसवंतराव ने सिंधिया और पेशवा की सेना को बुरी तरह से हराया और २३ अक्टोबर को पूना को घेर लिया। पेशवा इधर-उधर भागता रहा, आखिर बसीस में शरण ली।

इस हालत में बाजीराव द्वितीय ने अंग्रेज़ों की मदद माँगी। इस प्रकार अंग्रेज गवर्नर जेनरल वेलस्ली को महाराष्ट्रों के मामले में दखल देने का मौक़ा मिला। ३१ दिसंबर १८०२ में बसीस की जो संधि हुई, उस संधि-पत्र पर दस्तखत करके बाजीराव ने अंग्रेज़ों की मदद पायी। इस संधि के अनुसार पेशवा के राज्य में ६००० पैदल-सेना, उसके अनुकूल तोपें
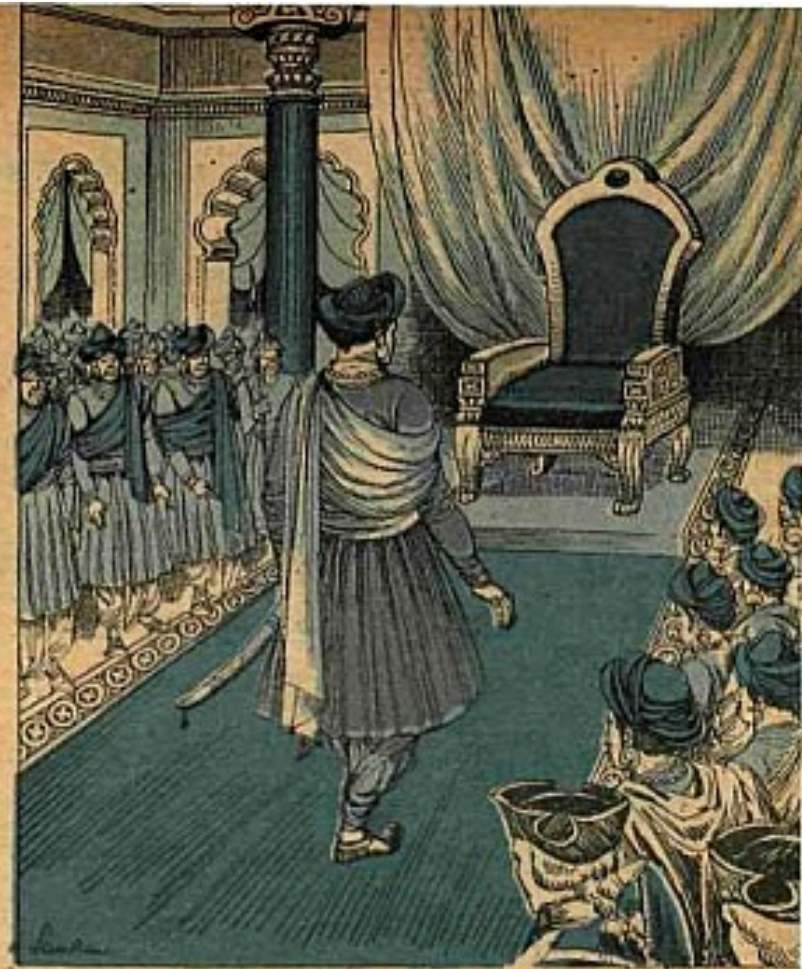
और यूरोपियन तोप-दल को शाश्वत रूप से रखा जाएगा। और इन सेनाओंके पीछे होनेवाले खर्च के मद्दे पेशवा छब्बीस लाख आमदनीवाले प्रान्त अंग्रेज़ों को सौंप देगा।

१३ मई १८०३ में ब्रिटिश सेनाओं ने बाजीराव द्वितीय को अपने साथ लेकर उसकी गद्दी पर उसे फिर बिठा दिया।

अंग्रेजवालों ने बसीस में जो संधि की उसमें एक बड़ी भूल थी। क्योंकि उसपर दस्तखत करनेवाला बाजीराव द्वितीय सब तरह से नालायक़ था। उसके दस्तखत का कोई मूल्य न था। यह संधि महाराष्ट्र के सभी नेताओं के क्रोध का कारण बनी।

उन लोगों ने यह अनुभव किया कि उनकी जाति का ही अपमान हुआ है। इसलिए आपसी मनमुटाओं को भूलकर सब एक हुए और अंग्रेज़ों का सामना करने का निश्चय हुआ।

पहले दौलतराव सिंधिया और रघूजी भोंसले द्वितीय (बीरार) एक हुए। उन लोगों ने जसवंतराव होल्कर को अपने दल में मिलने का स्वागत किया, लेकिन वह उनसे न मिला। सोचा कि उनकी एकता का परिणाम देखकर एक निर्णय पर पहुँचना उचित होगा। लेकिन वह उस समय शामिल होने को तैयार हुआ, जब मौक़ा हाथ से निकल चुका था।

१८०६ अगस्त में महाराष्ट्र और अंग्रेज़ों के बीच युद्ध शुरू हुआ। महाराष्ट्रों की सेना में २५०००० सैनिक और फ्रेंचवालों के पास सैनिक-शिक्षा प्राप्त ४०००० सिपाही थे। अंग्रेज़वाले भी लड़ाई के लिए काफ़ी तैयारी कर चुके थे। कई क्षेत्रों में युद्ध हुआ। प्रधान क्षेत्र दक्खन और उत्तर में भी थे। गुजरात, बुंदेलखंड और उड़ीसा में छोटे-छोटे क्षेत्र थे। सभी क्षेत्रों में अंग्रेज़ों की जीत हुई। सिंधिया और भोंसले कई बार हार गये, दोनों ने अलग-वलग संधियाँ कीं। १७ दिसंबर १८०६ में देवगाँव में जो संधि हुई, उसमें बीरार के शासक भोंसले ने कटक प्रान्त, बलासोर और वर्द्धा नदी के पश्चिम का सारा राज्य खो दिया और भोंसले अंग्रेज़ों का सामन्त बना।

३० दिसंबर में सिंधिया ने अंग्रेज़ों से सुरजी अर्जुनगाँव के पास संधि की, इसके अनुसार अंग्रेज़ों को गंगा-यमुना के बीच का अपना सारा राज्य सौंप दिया। साथ ही जयपुर, जोधपुर और गोहद के उत्तर का सारा राज्य, पश्चिम में अहमद नगर, भ्रोदनी, अजंता पहाड़ियों तक अपने समस्त अधिकारों को खो दिया।

भूतों के साथ व्यापार

एक गाँव में एक गरीब किसान के दो बेटे थे। बड़े का नाम रामप्रताप और छोटे का नाम शिवप्रसाद था। रामप्रताप ने बड़े घर की बेटी से शादी की, उसके दिन आराम से कटने लगे। शिवप्रसाद ने गरीब के घर शादी की। इसलिए उसके दिन बड़े मुश्किल से गुजरते थे। ससुराल से उसे एक कौड़ी भी न मिली थी।

अपनी पत्नी की सलाह से शिवप्रसाद लाजा, चने, पकौड़ी, मिठाई, बड़े वगैरह घर में बनवा कर झाबे में डाल, पास की बस्ती में बेच देता, जो कुछ मिलता, उससे दिन बिता देता।

एक दिन शिवप्रसाद का माल बिल्कुल न बिका। उस दिन कोई त्योहार था। बस्ती के लोगों ने अपने-अपने घरों में मिठाइयाँ बनवा ली थीं। इसलिए शिवप्रसाद से कोई खरीदने न आया। अंधेरे होने तक बस्ती में रहकर माल को सर पर रखे शिवप्रसाद ने घर की राह ली।

शिवप्रसाद जब अपने गाँव के श्मशान के पास पहुँचा तब तक खूब अन्धेरा फैल गया था। उस अंधेरे में कोई धुंधले आकार हिल रहे थे। शिवप्रसाद ने सोचा, वे आकार भूतों के ही होंगे। लेकिन वह डरपोक नहीं था, बड़ा हिम्मतवर था। बड़ा समझदार भी था। तक़लीफ़ के समय घबरा कर भागनेवाला न था, बल्कि कोई अच्छा उपाय सोच कर अपने को बचाने की अक्ल भी रखता था। इसलिए वह एक पेड़ के नीचे बैठकर भूतों को आकर्षित करने के लिए चिल्लाने लगा—"गरम गरम लाजे, पकौड़ियाँ, चने, बड़े, मिठाइयाँ!"

भूखे भूतों के कानों में शिवप्रसाद की आवाज़ पड़ी, फिर क्या था, झट भूतों ने

जीतमल मेडतिया

ले जाकर उसने अपनी औरत से कहा– "आज से मैं भूतों के साथ व्यापार करने जा रहा हूँ। उनसे दोस्ती कर लूँ, तो पाँचों उंगलियाँ घी में होंगी!"

शिवप्रसाद की औरत ने मना नहीं किया। उसे अपने पति की अक्लमंदी और सूझ-बूझ पर विश्वास था कि वह जो भी काम करता है, सोच-समझ कर ही करता है। यह सोच कर उसने दूसरे दिन कई तरह की चीज़ें बनाकर झाबा भरवा दीं। शाम के होने तक घर पर ही रहा। अंधेरे फैलते ही झाबा सर पर रखकर श्मशान की तरफ़ गया। भूतों ने उसको घेर लिया और पल-भर में झाबा खाली कर डाला।

शिवप्रसाद ने तब भूतों से कहा–"देखो, भाइयो! मैं व्यापार करनेवाला हूँ। पैसा लेकर चीज़ें बेचता हूँ। तुम लोग भी रोज़ पैसे दिया करो, तो बढ़िया चीज़ें ला दिया करूँगा। नहीं तो मुझसे नहीं बनेगा।"

"अरे, तुमको पैसे ही चाहिए न? यहीं रहो!" यह कहकर भूत चारों तरफ़ भाग गये और थोड़ी देर में रुपये लाकर झाबा भर दिया। फिर कहा–"सुनो,

उसको घेर लिया और पूछने लगे–"हमको नहीं दोगे?"

"तुम लोगों के लिए ही ले आया हूँ। पेट भरकर खा लो।" शिवप्रसाद ने जवाब दिया।

भूतों ने शिवप्रसाद के झाबे में हाथ डालकर सारा माल साफ़ कर डाला–"बड़े मजेदार हैं! ऐसी चीज़ें तो हमने अपनी जिंदगी-भर में नहीं खायीं। रोज़ हमें ला दो ना?" भूतों ने पूछा।

"अरे भाई, तुम लोग खाने को तैयार हो तो क्यों नहीं लाऊँगा?" शिवप्रसाद ने फिर कहा। उस दिन खाली झाबा घर

तुमको रोज़ माल लाना होगा, हम तुम्हारा इंतज़ार करेंगे!"

शिवप्रसाद रोज़ लाने का वचन देकर झाबा ले घर लौटा। झाबे-भर रुपये देखकर उसकी औरत फूली न समायी और चिल्ला उठी–"बाप रे! इतने रुपये!"

"क्या मैंने नहीं कहा था? भूतों के साथ व्यापार के माने क्या समझ रखा है? अब हम हाथ-पाँव हिलाये बिना ज़िंदगी-भर आराम से अपने दिन काट सकते हैं। हमारी गरीबी भाग जाएगी!" शिवप्रसाद ने पत्नी से कहा।

अपने छोटे भाई को रोज़ ब रोज़ खेत, मवेशी वग़ैरह खरीदते देख रामप्रताप अचरज में आ गया। एक दिन शिवप्रसाद के घर आकर, उसने पूछा–"एक साथ तुमको इतना धन कहाँ से आया? उसका राज हमें भी तो ज़रा बता दो!"

शिवप्रसाद ने रामप्रताप को सारी कहानी सुनायी।

"भूतों के साथ व्यापार बड़ा अच्छा मालूम होता है। मैं भी तुम्हारे जैसे व्यापार करके धन कमा लेता हूँ!" रामप्रताप ने कहा।

उस दिन रात को रामप्रताप भी झाबे भर माल भरकर श्मशान की तरफ़ रवना हुआ।

शिवप्रसाद को संदेह हुआ कि उसके भाई ऐसी हिम्मत रखते हैं कि नहीं! ज़रूरत पड़ने पर भूतों को डरा-धमकाने का भी उसने उपाय सोचा। भाई के श्मशान में जाने के थोड़ी देर बाद शिवप्रसाद भी थोड़ा तेल और दियासलाई की डिबिया लेकर श्मशान की ओर गया। श्मशान के पास कंटीली झाड़ियाँ थीं। उनपर तेल छिड़का दिया।

इस बीच रामप्रताप श्मशान में पहुँच गया। उसके आते देख भूतों ने उसे घेर

लिया और धमकाने लगे–"रोज़ आने का वचन देकर कहाँ गायब हो गये? आगे फिर हमें धोखा दोगे?" यह कहते गुस्से में आकर उसे तंग करने लगे!

इतने में शिवप्रसाद दौड़ते आया और बोला–"उनको छोड़ दो। पहले माल लानेवाला मैं था!"

भूतों ने रामप्रताप को छोड़ शिवप्रसाद को घेर लिया और पूछा–"तब तो तुम रोज़ क्यों नहीं आते?"

"बस, यही तुम सब जानते हो? मैं रोज़ आता हूँ। बीच रास्ते में और भूत आकर मुझे रोक देते हैं और सारी चीज़ें खा डालते हैं। मैं उन भूतों से बचकर तुम लोगों के पास आ भी नहीं पाता, मैं क्या करूँ?" शिवप्रसाद ने जवाब दिया।

"ओह! ऐसी बात है! देखें, वे भूत कहाँ हैं? दिखाओ तो, उनकी खबर लेंगे!" भूतों ने कहा।

"चलो!" यह कहकर शिवप्रसाद भूतों को कंटीली झाड़ियों के पास ले गया और बोला–"इनमें छिपे हैं।"

भूतों ने न आव देखा और न ताव। सब उनमें कूद पड़े। दूसरे ही पल में शिवप्रसाद ने झाड़ियों में आग लगा दी। पहले ही उसने तेल डाल रखा था, इसलिए भभक कर झाड़ियाँ जल उठीं। इससे घबरा कर सब भूत वहाँ से भाग खड़े हुए। इसके बाद श्मशान में भी किसीने भूतों को न देखा। गाँव वोले भी भूतों के डर से बच गये।

शिवप्रसाद अपने बड़े भाई को घर ले गया और बोला–"भैया! चिंता न करो! हम दोनों की जायदादें मिला कर बराबर बांट लेंगे। हमारे दिन मजे में कट जायेंगे।"

दोनों भाई मिल-जुल कर जिंदगी काटते थे और साथ ही अपनी जायदादें कई गुने खूब बढ़ा लीं।

शिथिलालय

[५]

[पुजारी के अनुचरों के जाल से बचकर आये शिखिमुखी के पास विक्रमकेसरी आया। ये दोनों मिलकर चोरों की टोह लेते पहाड़ी प्रदेश में पहुँचे। वहाँ पर त्रिशूल पकड़े एक बड़ा काठ का खिलौना दिखाई दिया। ज्यों ही उसके नीचे से लालकुत्ता दौड़ पड़ा, त्यों ही त्रिशूल बड़ी तेजी के साथ नीचे उतर गया। इसके बाद—]

काठ के खिलौने के हाथों के हिलते जो धीमी आवाज़ हुई, उससे चौकन्ना होकर लाल कुत्ता तीर की भांति आगे दौड़ा। दूसरे ही क्षण खिलौने के हाथ का त्रिशूल वेग से ज़मीन पर धँस गया। शिखिमुखी और विक्रमकेसरी चकित हो देखते ही रहे कि काठ के खिलौने के हाथ पहले की तरह ऊपर उठे।

"यह काठ का खिलौना नहीं, राक्षसी खिलौना है! लाल कुत्ते ने जान बचा ली। भाग्यवश हम भी मौत के मुँह में जाते बच गये!" विक्रमकेसरी ने कहा।

शिखिमुखी काठ के खिलौने के निकट पहुँचा। उसे ध्यान से देखते हुए बोला—"यह शिथिलालय के पुजारी द्वारा हमारे लिए बिछाया गया जाल है! लेकिन हमसे पहले कोई अभागा इस रास्ते जाकर, इसके हाथ के त्रिशूल से या तो घायल हुआ है, या मर गया है। देखो, त्रिशूल
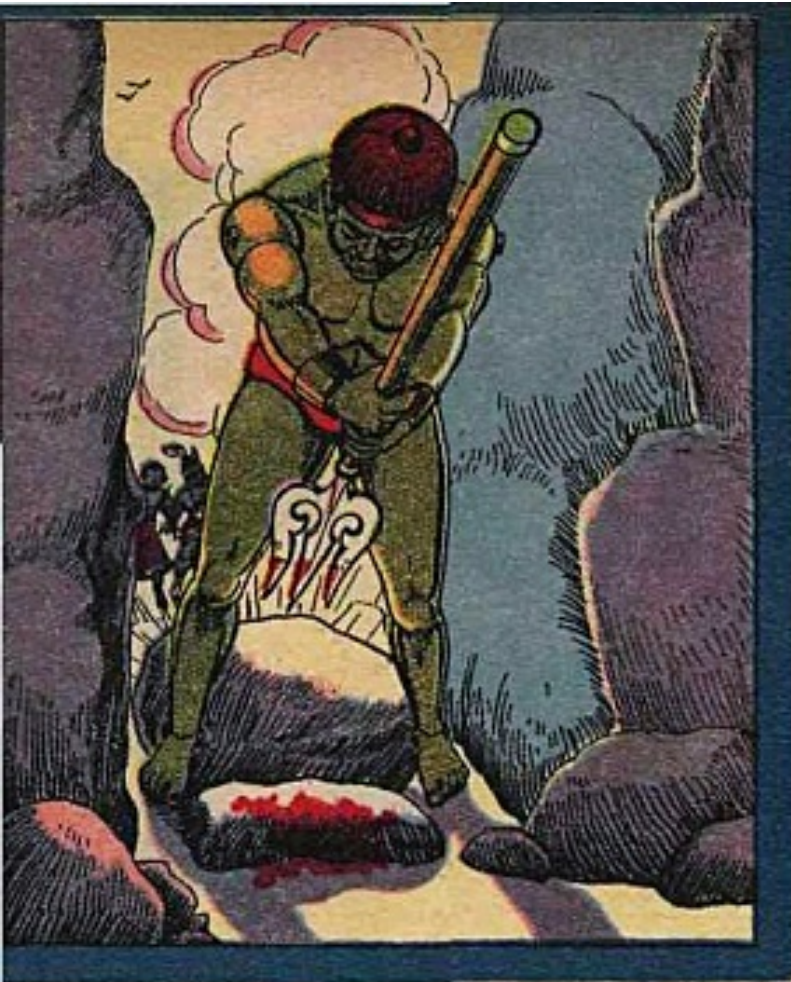
से लगा खून सूरज की किरणों में कैसे चमक रहा है।"

विक्रमकेसरी ने उस राक्षसी खिलौने के पैरों में से एक को भाले से चुभोकर देखा। खिलौना थोड़ा-सा हिल उठा! वह शिखीमुखी की ओर घूमकर बोला—" शिखी! मुझे लगता है, हम बड़ी आसानी से इसे गिरा सकते हैं। इसे इसी तरह रखना खतरनाक है। हमारे बन्धु लापरवाही से इसके नीचे से चलें तो बस मौत के शिकार होंगे।"

शिखिमुखी ने सर हिलाकर स्वीकृति दी। वहाँ के एक बड़े पत्थर को विक्रमकेसरी को दिखाते बोला—" हम दोनों शायद इसे हटा सकते हैं। यदि उसे काठ के खिलौने के पैरों पर लुढ़का सके, तो वह टूटकर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

यह निश्चय करके दोनों ने अपनी सारी ताक़त लगाकर उस बड़े पत्थर को जोर से काठ के खिलौने के पैरों की ओर लुढ़का दिया! वह पत्थर लुढ़कते जाकर खिलौने के एक पैर से जा टकराया। दूसरे ही क्षण काठ का खिलौना किर्र आवाज़ करते धम्म से नीचे जा गिरा। उसके हाथ का त्रिशूल दूर उछलकर दूर जा गिरा।

"ओह! हमने बड़ा अच्छा काम किया, लेकिन इस राक्षसी खिलौने ने गिरते वक़्त जो आवाज़ की, वह पुजारी और उसके अनुचरों को सुनाई दी होगी!" शिखिमुखी ने कहा।

"इसमें कोई शंका की बात नहीं है। मुझसे पूछा जाय तो मैं कहूँगा, उन दुष्टों ने हमें इस खिलौने की ओर बढ़ते चट्टानों की आड़ से पहले ही देखा होगा। वे यह सोचते इंतज़ार भी करते होंगे कि उस खिलौने के हाथ का त्रिशूल कब हमारे कलेजों पर चुभेगा!" विक्रमकेसरी ने कहा।

"ठीक है। मुझे अब एक संदेह हो रहा है! हम कहीं भूल से उन बदमाशों के पंजों में तो नहीं फँस रहे हैं? शबर बस्ती के लोगों को वापस भेजकर हमने निश्चय ही भारी गलती की। उनकी बड़ी भीड का सामना हम दोनों कैसे कर सकते हैं? वे यहीं कहीं पास में पहाड़ी गुफा में होंगे! इसमें रत्ती-भर भी संदेह नहीं है।" शिखिमुखी ने कहा।

वे दोनों बात कर ही रहे थे कि लाल कुत्ता जो पहाड़ी गुफाओं में गया था, भूंकते उनके पास दौड़ आया! कुत्ते के भूंखते देख शिखिमुखी ने भाँप लिया कि पुजारी के अनुचर यहीं कहीं छिपे होंगे और शायद वे उन पर हमला करने भी आ रहे हों!

शिखिमुखी ने लाल कुत्ते का सर सहलाते कहा-"केसरी! हमारा यहाँ पर खड़े हो आगे बढ़ना बहुत ही खतरनाक है! पुजारी के अनुचर बाण चलाकर हमारा खात्मा कर सकते हैं! चट्टानों की ओट में रेंगते आगे बढ़ते जायेंगे! लाल कुत्ता हमें रास्ता दिखाएगा!"

लाल कुत्ता गंध लेते आगे बढ़ने के बदले पिछली टांगों पर उठ खड़ा हुआ और ज़ोर से भूंकने लगा! उसके व्यवहार से परिचित

शिखिमुखी जो चट्टानों की ओट में रेंगता जा रहा था, उठ खड़ा हुआ। उसकी दृष्टि अपनी ओर दौड़ आनेवाले एक शबर पर पड़ी। उसके हाथ में तीर-कमान हैं। वह इस तरह हाँफ रहा था, मानों दूर से दौड़ता आ रहा हो!

जब शबर शिखिमुखी के पास आया तब उसने पूछा-"तुम दौड़ते क्यों आते हो? क्या हुआ? किस बस्ती के रहनेवाले हो?"

शबर ने हांफते हुए कहा-"मैं गोबस्ती-का रहनेवाला हूँ। मेरी बस्ती के सारे अनाज को सवर-जाति का दल लूट रहा है। मैं आप लोगों से मदद पाने आ रहा

"ऐसा आदमी कोई नहीं। सवर-जाति का नेता लट्ठूसिंह है। उसकी बड़ी-बड़ी मूँछें हैं, देखने में जंगली-भैंस-सा लगता है।" गोबस्ती का शबर बोला।

"अच्छा! तुम मेरी बस्ती में जाकर सारा हाल सुना दो और मदद के लिए लोगों को बुला लाओ। हम दोनों पहले तुम्हारी बस्ती में जाकर लट्ठूसिंह को धान के साथ भागने से रोक देंगे। तुम्हारी बस्ती का रास्ता मैं जानता हूँ।" शिखिमुखी ने कहा।

गोबस्ती का शबर शिखिमुखी से विदा लेकर दौड़ गया। शिखिमुखी और विक्रम-केसरी दोनों पहाड़ी रास्ते से गोबस्ती की ओर रवाना हुए। पंद्रह मिनिट में वे लोग गोबस्ती में पहुँचे। वहाँ उन लोगों ने देखा—बस्ती के एक तरफ़ पेड़ों के नीचे शबरों की भीड़ खड़ी हुई है। उनको डांटते-डपटते सबर-जाति की दस-बारह लोग पहरा दे रहे हैं। उनको देखते ही शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने अनुमान लगाया कि वे लुटेरे शिथिलालय के पुजारी के अनुचर हैं।

शिखिमुखी के मन में अचानक एक उपाय सूझा। वह उन पहरेदारों के पास

था। तुम शबर-बस्ती के नेता शिवाल के लड़के शिखिमुखी हो न! तुम्हारे कुत्ते को देख मैंने सोचा—"इस प्रदेश में तुम्हारी बस्ती के लोग होंगे। इसीलिए तुम्हारी बस्ती के रास्ते को छोड़कर कुत्ते के पीछे दौडता आ रहा हूँ।"

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने सोचा कि शबर के कहनेवाले लुटेरे सवर-जाति के लोग शिथिलालय के पुजारी के अनुचर होंगे! शिखिमुखी ने पहाड़ी की तलहटी में स्थित गोबस्ती की ओर देखते हुए पूछा—"अनाज को लूटनेवाले लुटेरों के साथ लंबा व्यक्ति कोई है?"

पहुँचा और पूछा–"तुम्हारा मालिक वह पुजारी कहाँ? उससे जरूरी काम है।"

शिखिमुखी के मुँह से यह बात सुनकर पहरेदारों में से एक ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"पुजारी साहब को देखने लायक तुम बड़े आदमी हो? बदमाश! शबर का बच्चा! मेरे मालिक चाहें तो अभी प्रत्यक्ष होंगे, चाहें तो गायब भी हो सकते हैं!"

इतने में पहरेदारों में से एक दूसरा आदमी शिखिमुखी और लाल कुत्ते की ओर घूर-घूरकर देखते हुए बोला–"अरे! यह तो रात में हमारे बिछाये जाल से बचकर भागा हुआ शबर का बच्चा है! इसने हमारे दो साथियों को घायल भी किया है। इस कुत्ते को पकड़ने जाकर हममें से चार लोग काट भी खा चुके हैं। बगल के उस आदमी को कहीं देखा-सा मालूम होता है।" यह कहते भाला उठाकर शिखिमुखी और विक्रमकेसरी की ओर आगे बढ़ा।

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी ने भालों का निशाना किया। थोड़ी देर रुककर शिखिमुखी बोला–"तुम्हारे पहरेदारों से हमारी कोई दुश्मनी नहीं है। लेकिन हम पर हमला करोगे तो तुम्हारी मौत निश्चित

है। इस बीच में वे सब शबर भाग जाएँगे, जिनका तुम पहरा देते हो! यह बात तुम्हारे पुजारी को मालूम हो जाएगी तो तुमको कच्चा खा डालेगा!"

शिखिमुखी की यह बात सुनकर वह सबर रुक गया और अपना भाला नीचा करके फिर अपने साथियों में जा मिला और बोला–"हमारी जाति के सरदार लट्ठूसिंह ने हमें जो काम सौंपा उसे पूरा करना है। हमें इन बदमाशों से क्या मतलब है?" यह कहकर वह शिखिमुखी की ओर घूमा और बोला–"पुजारी साहब कहाँ हैं, हम नहीं जानते! उस साहब के दायाँ हाथ

कहलानेवाले लट्टूसिंह गाँव में अनाज की गठरियाँ बँधवा रहे हैं! मरना चाहते हो तो वहाँ जाकर उनसे ही पुजारी साहब की बात पूछो।"

शिखिमुखी और विक्रमकेसरी वहाँ से गाँव की ओर रवाना हुए। थोड़ी दूर चलने के बाद सोचने लगे कि हमें क्या करना है। उन्हें विश्वास हुआ कि आधे घंटे में गाँव से उन्हें मदद मिलेगी।

"उस लट्टूसिंह को बातों में लगाकर उसे आनाज उठवाकर भागने से थोड़ी देर रोक सके तो मेरे पिताजी बस्ती के लोगों को साथ ले आकर इन लुटेरों को पकड़ लेंगे। उसके बाद अकेले पुजारी को बंदी बनाना कोई मुश्किल की बात नहीं है। क्यों विक्रम? तुम क्या कहते हो?" शिखिमुखी ने पूछा।

"वाह! बड़ा अच्छा सुझाव है! अच्छा, चलो।" विक्रमकेसरी ने कहा। वे दोनों ज्योंही गाँव के बीच में पहुँचे त्योंही देखा कि कुछ सबर लोग अनाज निकाल-निकालकर गठरियाँ बाँध रहे हैं। एक तरफ़ आजानुबाहु झबरेदार मूँछवाला खड़ा हुआ है। वह मूँछों पर ताव दे रहा है, उसके हाथ में एक लंबा भाला है।

शिखिमुखी उसके पास जाते हुए रुक गया और ज़ोर से बोला—"लट्टूसिंह! तुम बड़ा अन्याय करते हो! गाँव के सब लोगों ने मिलकर जो अनाज बचा रखा है, उसे तुम जबरदस्ती लूटकर ले जाते हो! यह न्याय नहीं है।"

ये बातें सुनते ही लट्टूसिंह झट पीछे घूमकर शिखिमुखी की ओर अचरज के साथ देखने लगा, फिर बोला—"तुम कौन हो बे? शबर के सरदार शिवाल के बेटे हो? तुम्हारे बारे में मैंने काफ़ी सुन रखा है! एक बार मैंने तुमको देखा भी है। तुम सबर-जाति के नेता को न्याय

CHITRA
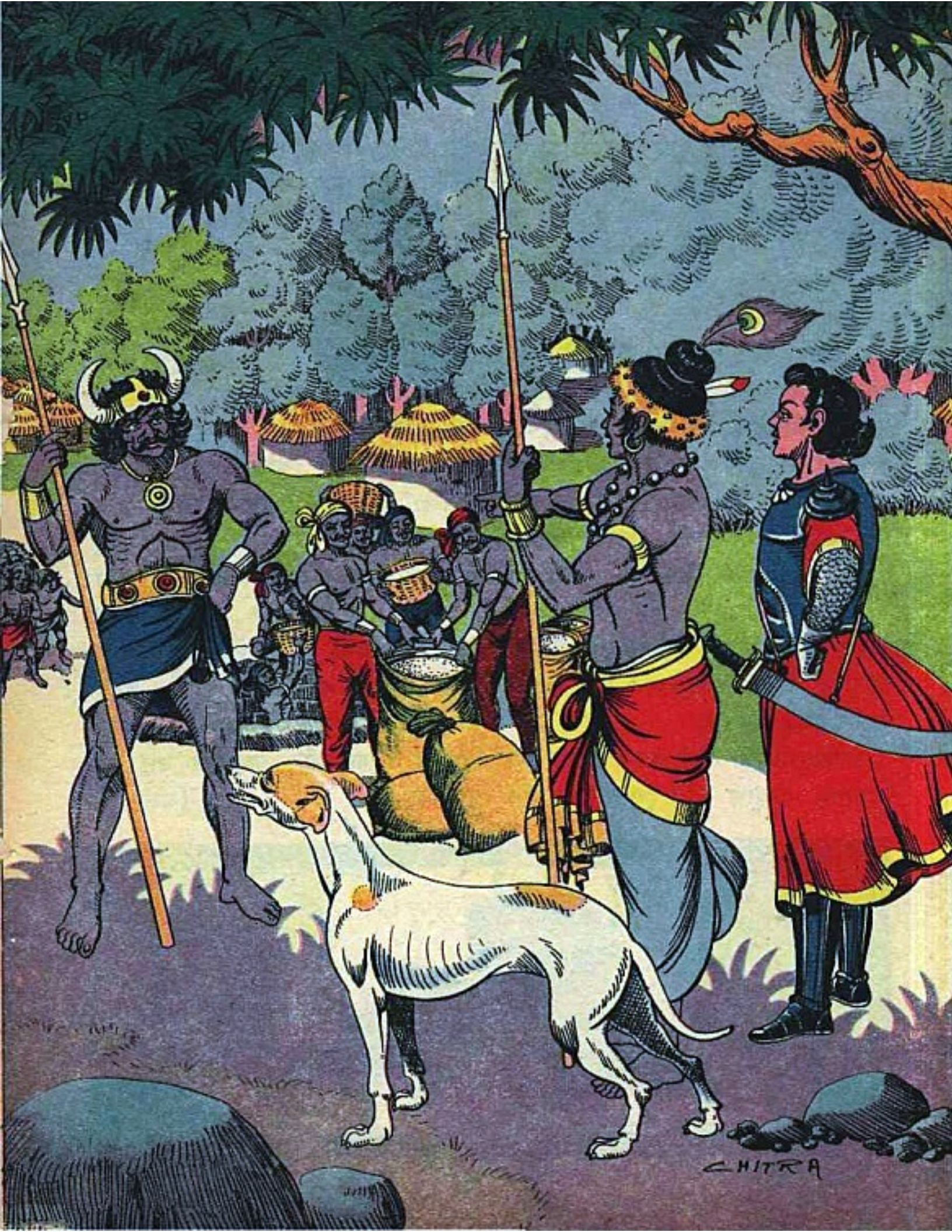
और धर्म सिखाने के लिए आये हो ? यह सिखाना भी तुमको ठीक से नहीं आया ।" ये बातें कहकर उसने पास में खड़े हुए अपने नौकरों की ओर देखा और कहा– "इसे और इसके दोस्त को पकड़कर पेड़ से बाँध दो ।"

लट्ठूसिंह की ये बातें सुनते ही उसके चार अनुचर आगे बढ़ आये । शिखिमुखी और विक्रमकेसरी को पकड़ने के विचार से उनकी ओर आये । लेकिन शिखिमुखी ने अपने दोस्त को सावधान किया और एक-एक क़दम पीछे हटाने लगा । उसका उद्देश्य था, उनको पकड़ने आनेवाले लोगों को थोड़ी दूर तक ऐसे ही अपने साथ ले जाकर खातमा करे । ऐसा नहीं हो, तो लट्ठूसिंह के साथ रहनेवाले लोग उनको घेरकर पकड़ सकते हैं ।

शिखिमुखी को पीछे क़दम रखते देख लट्ठूसिंह परिहास करते हुए बोला–" मैंने नहीं सोचा था कि शबर सरदार शिवाल का बेटा ऐसा कायर भी है ।"

यह बात सुनते ही शिखिमुखी दो क़दम आगे बढ़ाकर परिहास करते हुए बोला– "लट्ठूसिंह ! तुम मुझसे उम्र में, ऊँचाई में और ताक़त में भी दुगुने हो ! मुझे पकड़ने के लिए तुम अपने अनुचरों को क्यों भेजते हो ? तुम्हीं यह काम क्यों नहीं करते ?"

लट्ठूसिंह की आँखें आग उगलने लगीं । एक बार हुँकार करके बाएँ हाथ से मूँछों पर ताव देने लगा । इसके बाद भाला उठाकर बोला–" लगता है, तुम मौत के मुँह में जाने के लिए यहाँ आये हो ! लो, आता हूँ ! अपने को बचा लो !" यह कहते भाले का शिखिमुखी के कलेजे की ओर निशाना किया और उछलकर उस पर कूद पड़ा । (अभी है)

जादू की बीमारी

हठी विक्रमादित्य पेड़ के पास वापस लौटा। पेड़ से शव को उतारकर कंधे पर डाल हमेशा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर जाने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा—"राजन्! तुम्हारी लगन वज्रदत्त की लगन से भी बढ़कर है। लेकिन उसकी तरह तुम अपने हाथ में आयी हुई सफलता को हाथ से जाने न दो। तुम्हारे श्रम को भुलाने के लिए मैं वज्रदत्त की कहानी सुनाता हूँ। सुनो!"

बेताल यों कहने लगा—

प्राचीन काल में मगध के राजा देवदत्त का वज्रदत्त नामक एक लड़का था। बचपन से ही वैद्य-शास्त्र में उसे बड़ी अभिरुचि थी। छोटी उम्र में ही सभी वैद्य-ग्रंथ पढ़ डाले। इसके बाद सभी जड़ी-बूटियों के प्रयोग भी सीख लिये। कुछ समय तक जंगली लोगों के साथ

वेताल कथाएँ
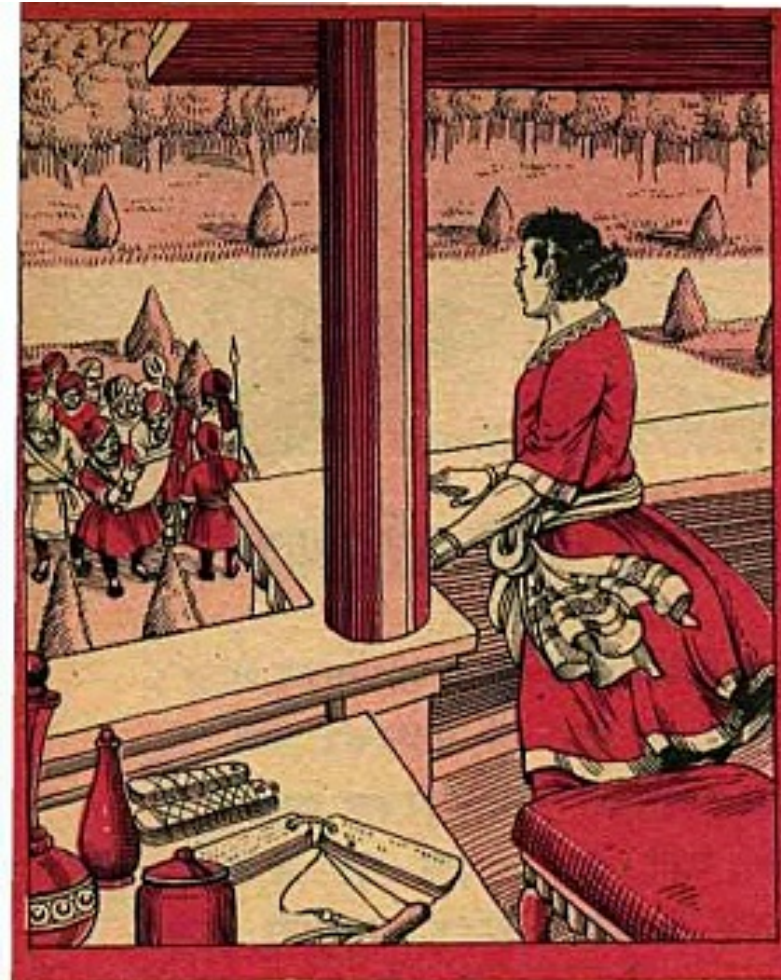
घूमकर कई गुप्त इलाज भी सीखे, जवानी में पहुँचते-पहुँचते अपर धन्वंतरी नाम से मशहूर हुआ।

विवाह के योग्य होते ही उसके माता-पिता ने उसका विवाह करने का निश्चय किया। वज्रदत्त देखने मे मन्मथ-जैसा था; इसलिए उसके वास्ते अनुपम सौन्दर्यवती कन्याओं को लाने का बड़ा प्रयत्न किया गया; लेकिन राजा और रानी को जो थोड़ी बहुत कन्याएँ पसंद आयीं, वे वज्रदत्त को बिल्कुल पसंद न आयीं। वह किसी भी व्यक्ति को देखे तो तुरंत उसकी शारीरिक और मानसिक कमजोरियों को बतला सकता है। इसलिए उसने जिन-जिन कन्याओं को देखा, उनमें कोई न कोई त्रुटि दिखाई दी।

उस जमाने में विदर्भ देश के महाराजा विक्रमसेन के तेजोवती नामक एक अनुपम सुंदरी कन्या थी। उसके माता-पिता भी अपनी कन्या के योग्य वर की खोज में थे। उन लोगों ने वज्रदत्त के सौन्दर्य का समाचार सुन रखा था। परंतु अपनी कन्या को मगध ले जाकर वज्रदत्त को दिखाने में अपने लिए अपमान की बात समझते थे। फिर भी उनका विश्वास था कि वज्रदत्त तेजोवती को समक्ष देखेगा तो, जरूर उसे वर कर, उसके साथ विवाह करेगा।

इस हालत में तेजोवती और उसके माता-पिता ने मिलकर वज्रदत्त को विदर्भ में बुलाने का एक उपाय सोचा। अचानक देश-भर में यह खबर फैल गयी कि तेजोवती की बोली बंद हो गयी और वह गूंगी हो गयी। विक्रमसेन ने यह घोषणा की कि अपनी पुत्री से बोलवानेवाले वैद्य को उसके वजन का सोना दिया जाएगा। कई वैद्यों ने आकर तेजोवती की जांच की; लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। कोई भी वैद्य अगर

सचमुच बोली बंद हो गयी हो तो इलाज कर सकता है; लेकिन बोली बंद होने का अभिनय करनेवाले का इलाज कौन कर सकता है ?

कुछ समय बीतने के बाद विक्रमसेन ने मगध में एक दूत को भेजते हुए वज्रदत्त से प्रार्थना की कि वह उसकी कन्या की चिकित्सा करके जाएँ। वज्रदत्त ने अपने पिता से अनुमति ली और दूत के साथ विदर्भ आ पहुँचा। विक्रमसेन ने वज्रदत्त की एक दामाद से बढ़कर सब तरह की इज्जत की। उसके बाद अपनी कन्या को दिखाया। तेजोवती को देखते ही वज्रदत्त ने मन में सोचा कि ऐसी कन्या दुनिया-भर में ढूंढ़ने पर भी न मिलेगी। इसलिए इलाज के खतम होते ही राजा से प्रार्थना करना चाहा कि उस कन्या के साथ उसका विवाह करें।

परन्तु वज्रदत्त को यह समझने में ज्यादा क्षण न लगे कि वास्तव में तेजोवती की बोली बंद न हुई, किसी कारण से वह ऐसा अभिनय कर रही है।

"इलाज करने के लिए यह कोई कठिन बीमारी नहीं है। आपके राज्य में जो बड़े-बड़े वैद्य हैं, इसका इलाज न कर सकें, इस बात पर मुझे अचरज होता है। मैं एक

गोली देकर इसकी बीमारी ठीक कर सकता हूँ।" यह कहकर वज्रदत्त ने अपनी दवाइयों की थैली में से एक गोली निकाली और उसी समय तेजोवती से निगलवायी।

उसी रात को वज्रदत्त विदर्भ राजा के यहाँ बिदा लिये बिना गुप्त रूप से मगध चला गया।

दूसरे दिन सुबह सचमुच तेजोवती की बोली बंद हो गयी।

विक्रमसेन घबरा गया और वज्रदत्त को बुला लाने के लिए उसके निवास के पास आदमी भेजा, लेकिन उसको मालूम हुआ, वज्रदत्त चला गया है।

आखिर लाचार होकर विक्रमसेन अपनी कन्या को साथ लेकर मगध गया। वज्रदत्त से कई तरह से माफ़ी माँगी और यह भी बताया कि उसकी कन्या ने बोली बंद होने का अभिनय क्यों किया ?

वज्रदत्त ने तेजोवती को एक और गोली दी। फिर पल-भर में उसकी बोली वापस आयी। वज्रदत्त के माता-पिता ने तेजोवती के प्रति बडी सहानुभूति दिखायी। उन लोगों ने सोचा कि अपने पुत्र के साथ शादी करने के ख्याल से उस कन्या ने बोली बंद होने का अभिनय किया तो वह कोई बड़ा अपराध नहीं है। यह सोचकर वे खुश भी हुए कि तेजोवती उनकी बहू बने तो क्या ही अच्छा हो!

"मैं जिस काम के लिए आया था वह तो पूरा हो चुका है। अब मेरी कन्या के साथ विवाह करके मेरी इच्छा की पूर्ति करो।" विक्रमसेन ने वज्रदत्त से कहा।

"आप लोग अपनी कन्या की चिकित्सा के लिए आये हैं, मैंने उसकी पूर्ति की ; इससे ज्यादा मुझसे कुछ न पूछें।" वज्रदत्त ने कहा।

विक्रमसेन ने देवदत्त और उसकी पत्नी से निवेदन किया—"आपके पुत्र के मन को

बदलने की कोशिश कीजिये। मेरी कन्या इसी पर आशा लगाये बैठी है!"

माता-पिता ने वज्रदत्त को तेजोवती के साथ शादी करने के लिए कई तरह से समझाया, लेकिन उसने न माना। आखिर लाचार होकर अपनी कन्या को साथ ले, विक्रमसेन विदर्भ को वापस लौटा।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर पूछा– "राजन् वज्रदत्त ने पहले-पहल तेजोवती को देखते ही उसके साथ ब्याहना चाहा। आखिर इनकार करने का क्या कारण है? क्या उस युवती के बोली बंद होने का अभिनय करने पर नाराज हो गया? कन्या ने ऐसा किया है तो केवल उसी के लिए तो है! यह बात जानने पर भी उसका मन क्यों नहीं बदला? अगर यह सोचकर उसपर नाराज़ हो गया हो, कि कन्या ने उसे धोखा दिया है तो उसकी बोली वापस क्यों मंगवायी? इन शंकाओं का समाधान जानकर भी न बताओगे तो तुम्हारा सर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमादित्य ने कहा–"वज्रदत्त सभी बीमारियों का निदान करनेवाला अपर धन्वंत्री है। लेकिन तेजोवती को वज्रदत्त की शक्तियों पर विश्वास न रहा, इसलिए उसने बोली बंद होने का अभिनय
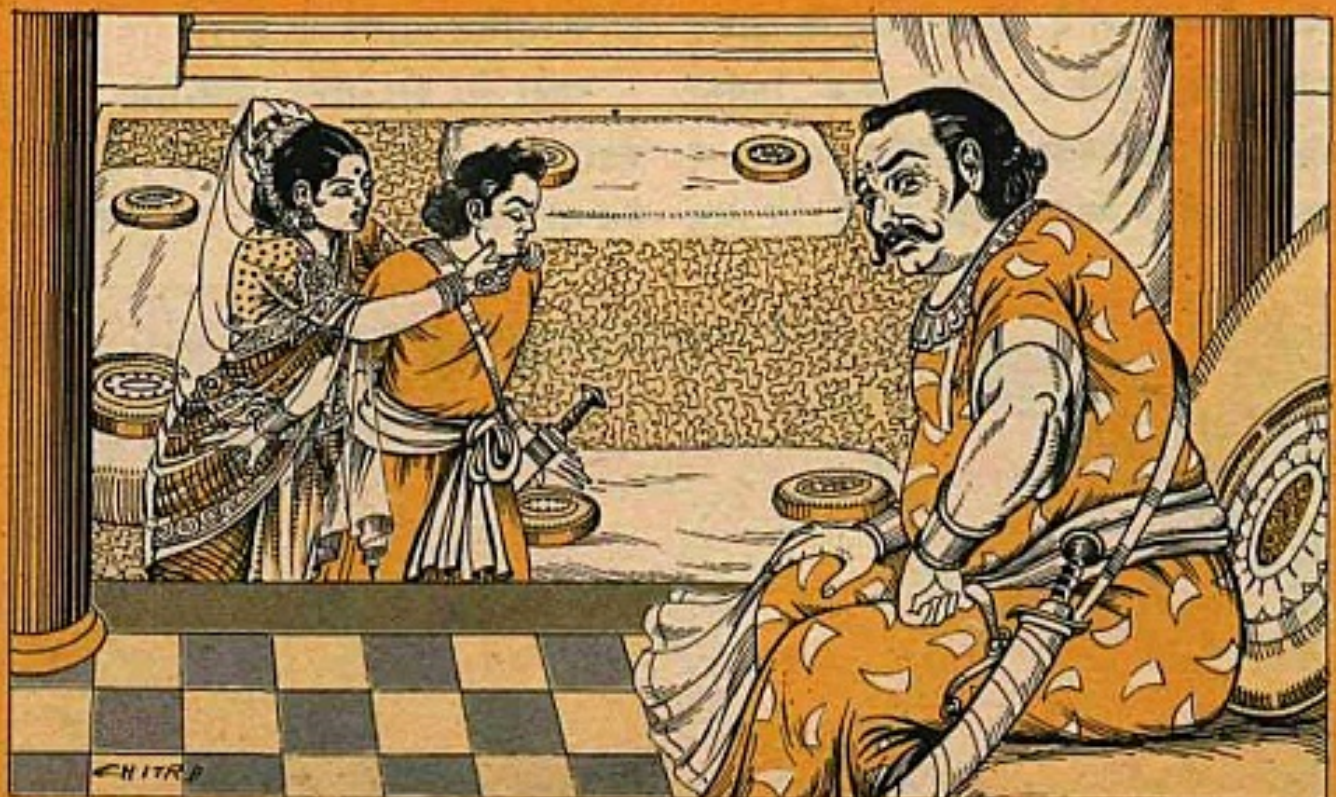
किया, इस तरह उसकी शक्ति का बुरी तरह अपमान किया। अपनी शक्ति का प्रदर्शन करने के लिए ही वज्रदत्त ने सचमुच उसकी बोली बंद करायी। बीमारों के चाहने पर इलाज करना वैद्य का कर्तव्य है। इसलिए उसने जो बोली बंद करायी थी उसे फिर से मँगवाकर अपने कर्तव्य का पालन किया और फिर एक बार अपनी शक्ति को साबित किया। अब तेजोवती के साथ शादी करने की बात रही! तेजोवती का उद्देश्य वज्रदत्त के सामने उपस्थित होना ही है, तो वज्रदत्त जब उसके पास आया उसी क्षण वह सच बतला देती कि सचमुच उसकी बोली बंद नहीं हुई है, सिर्फ़ उसको बुला भेजने के लिए ही यह उपाय सोचा गया है, तो वज्रदत्त ने शायद क्षमा किया होता! अपने साथ विवाह करनेवाली तेजोवती यह सारा नाटक न रचकर सीधे मगध चली जाती तो वह ज़रूर शादी करता! ऐसा न करके उसको मगध बुलवाकर, वहाँ पर भी उसकी शक्ति पर शंका प्रकट करना वह सहन न कर सका। उसके साथ विवाह करने की इच्छा रखते हुए भी तेजोवती मगध न जा सकी। इसलिए वैद्य के रूप में उसे देखने आने का इंतज़ाम वज्रदत्त ने किया। इसलिए विक्रमसेन ने तेजोवती की बोली वापस आते ही यह कहा था कि वे जिस काम के लिए आये थे वह काम पूरा हो चुका है। मगध में आने का उनका उद्देश्य वज्रदत्त के साथ तेजोवती का विवाह करना ही रहा है, तो विक्रमसेन को कभी जाना था। इसलिए वज्रदत्त का तेजोवती के साथ विवाह करने से इनकार करना उचित कारण ही है।"

राजा के इस तरह मौन-भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हुआ और फिर पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)
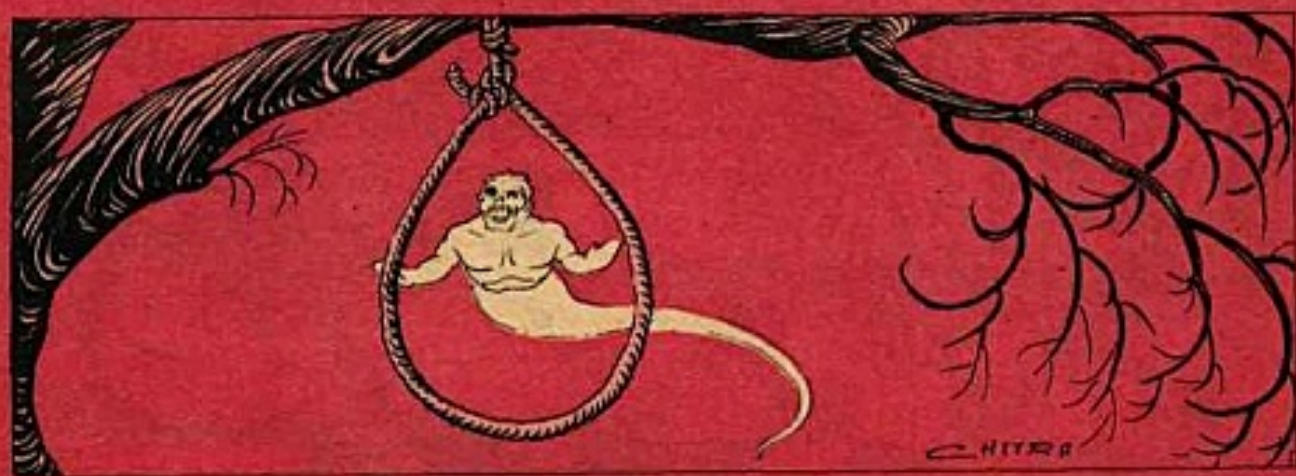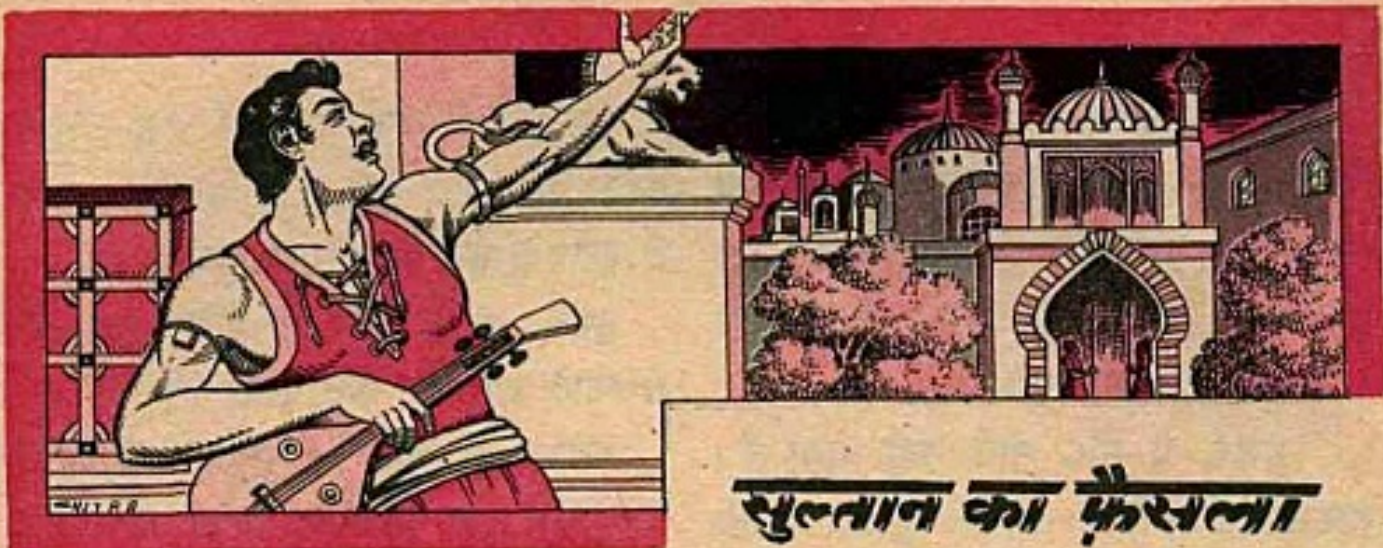
सुल्तान का फ़ैसला

अरेबिया में एक शहर पर एक सुल्तान राज करता था। उस शहर में हसन नामक एक गरीब जवान रहता था। वह देखने में बड़ा खूबसूरत और अच्छा गायक भी था। वह जमीला नामक एक खूबसूरत गरीब युवती से प्यार करता था।

जमीला की खूबसूरत देख मुग्ध होकर एक अमीर ने उससे शादी करनी चाही, और शादी तय करने के लिए दलाल को भेजा। लेकिन जमीला ने अमीर के पास यह खबर भेजी कि वह हसन को छोड़कर और किसी से शादी न करेगी। अमीर जमीला को अपनी दौलत के बल पर काबू में न कर सका। एक दिन रात को अपने नौकरों को भेजकर जमीला को उसके घर से जबरदस्ती अपने घर मँगवाया। यह खबर मालूम होते ही हसन तुरन्त सुल्तान के महल में गया और पहरेदारों से कहा कि वह जल्दी सुल्तान के दर्शन करना चाहता है। द्वारपालों ने कहा कि यह तो सुल्तान के सोने का वक़्त है, इसलिए दूसरे दिन सुबह आ जाना।

"सबेरे होने तक मेरे प्रति बड़ा अन्याय होगा।" हसन ने घबराकर कहा।

"इसके लिए हम क्या करेंगे? अब सुल्तान को खबर देंगे तो हमारे गले काटे जाएँगे।" द्वारपालों ने कहा।

हसन की समझ में न आया कि अब क्या करना चाहिए। वह अपने मधुर कंठ से दीनतापूर्वक गाने लगा।

नींद के न आने से करवटें बदलनेवाले सुलतान के कान में हसन का संगीत अमृत की वर्षा-सी लगा। उसने अपने नौकरों को बुलाकर कहा—"उस गानेवाले आदमी को यहाँ बुला लाओ!"

नौकरों ने हसन को बुला ले जाकर सुलतान के सामने हाज़िर किया।

मदन मोहन

हसन ने सुलतान को झुककर सलाम किया। सुलतान ने उससे कहा–"तुम्हारा कंठ बड़ा सुरीला है। सबेरा होने तक मुझे तुम गीत गाकर सुनाओ। मैं तुम्हारी इच्छा की पूर्ति करूँगा।"

"हुजूर, मैं गीत गाने नहीं आया हूँ। इन्साफ़ के लिए आया हूँ। मुझसे मुहब्बत करनेवाली युवती को एक अमीर ज़बरदस्ती ले गया है। आप इसे रोकेंगे, नहीं तो वह उससे शादी कर लेगा! वह दूसरे की औरत तो मेरी जिंदगी बरबाद हो जायगी और मैं पागल हो जाऊँगा।" हसन ने अपना दुख सुनाया।

सुलतान ने ज़रा सोचकर कहा–"तुम सबेरा होने तक मुझे गीत सुनाओ! कल मैं ज़रूर तुम्हारे प्रति न्याय करूँगा।

हसन भारी दिल से करुण रस को छलकाते रात-भर गीत गाता रहा।

सबेरा हो गया। सुलतान ने अपने सिपाहियों को बुलाकर आज्ञा दी–"तुम लोक अमुक अमीर को तुरंत पकड़ लाओ।"

अमीर ने सिपाहियों के साथ आकर सुलतान को सलाम किया।

"हमने सुना है कि कल रात को तुमने जमीला नामक युवती को ज़बर्दस्ती अपने घर पहुँचा दिया है। अगर यह सच है,
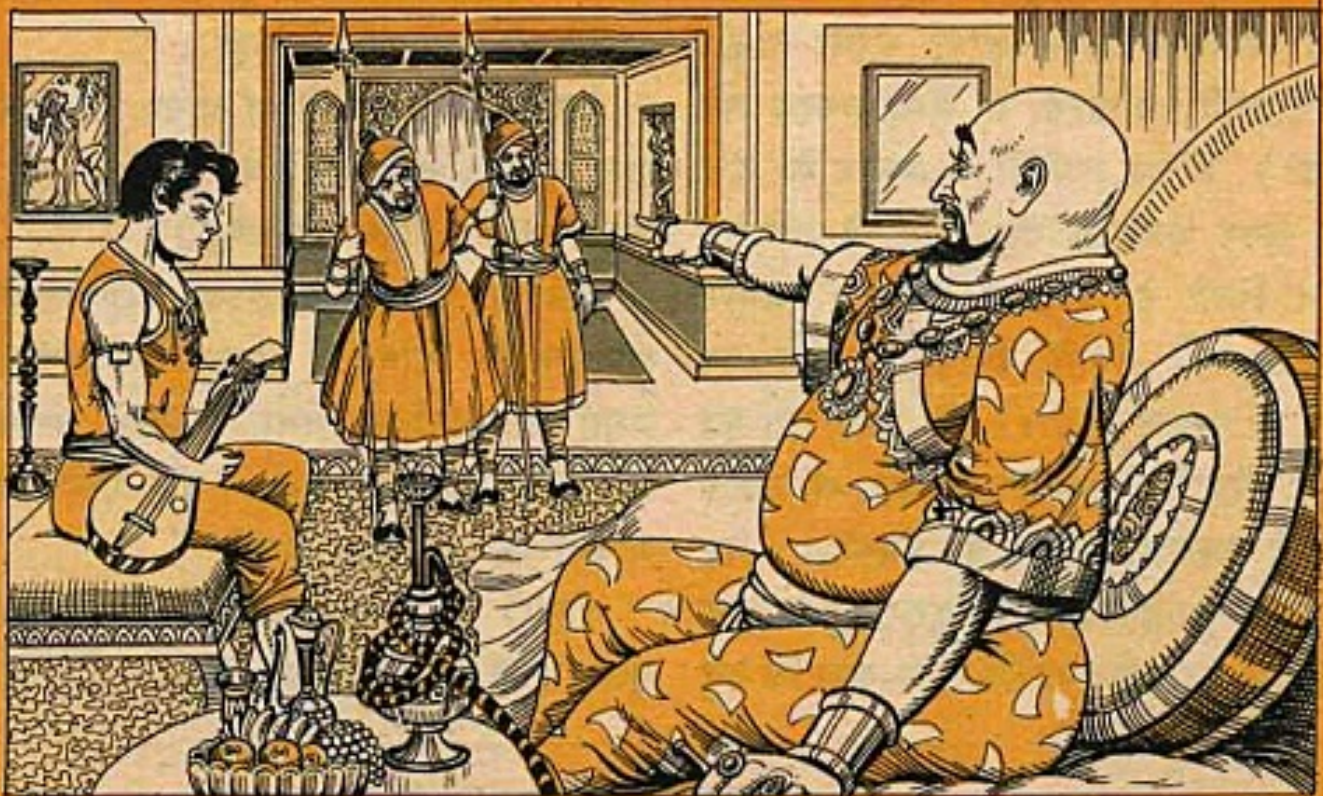
तो तुमको सख्त सजा देनी पड़ेगी।" सुलतान ने कहा।

"हुजूर! थोड़ी देर पहले ही काजी ने हमारी शादी करायी। शादी के बाद हम लोग दावत खा रहे थे। इतने में सिपाही आकर मुझे हुजूर के दरबार में ले आये हैं।" अमीर ने जवाब दिया।

सुलतान ने आँखें लाल-पीली करके कहा—"तुम जमीला को जबर्दस्ती उठा ले गये हो! और तुमने उससे शादी भी कर ली है। तुमको मौत की सजा देता हूँ।" यह कहकर सिपाहियों को आदेश दिया—"तुम लोग वली से कह दो कि इस बदमाश को मौत की सजा दे।"

सिपाही अमीर को पकड़कर ले गये। यह सब देख हसन को बड़ा दुख हुआ। उसने सुलतान से कहा—"हुजूर, आप उसी समय रोक देते तो यह शादी न होती! सबेरा होने तक आपने देरी क्यों की?"

सुलतान ने हँसकर कहा—"हसन, तुम अच्छे आदमी हो! वह अमीर अव्वल दर्जे का बदमाश है! इस तरह के उसने कई काम कर डाले और रुपये देकर सब के मुँह बंद किये हैं। मुझे मालूम था कि सबेरा होने के पहले वह तुम्हारी जमीला से शादी करेगा! इससे तुम्हारा कोई नुक़सान नहीं होता! अमीर के मरने के बाद जमीला उसकी जायदाद की मालिकिन बनेगी, मैं तुम दोनों की शादी के लिए अनुमति दूँगा। तुम मेरे दरबारी गायक बनकर मुहब्बत के गीत सुना सकते हो!"

हसन को यह समझते देर न लगी कि वह जो इन्साफ़ चाहता था, उससे कहीं ज्यादा इन्साफ़ सुलतान ने किया है और अमीर की मौत का कारण केवल उसी की शिकायत नहीं, बल्कि और भी कई कारण हैं। यह जानने पर उसका दिल शांत हो गया।

पिशाचों का रसोइया

एक गाँव में एक विधवा थी। उसके एक बेटा था। उसका नाम गुलज़ारीलाल था। वह होशियार था, लेकिन हमेशा आवारे की तरह घूमा करता था। वह कोई काम-वाम नहीं जानता था। कुछ दिन के बाद उसकी माँ मर गयी। तो मामा उसे अपने गाँव ले गया। वहाँ पर एक के बाद एक चार-पांच जमीन्दारों के यहाँ काम पर लगा दिया। लेकिन वह कहीं भी टिक न सका। मामा ऊब गया और उसे घर से निकाल दिया।

गुलजारीलाल अपने मामा के यहाँ से निकलकर चार-पांच दिन तक सफ़र करता रहा। एक दिन उसने जंगल के बीच एक पुराना किला देखा। किले के सामने एक कुआँ था। एक बूढ़ी औरत हांफते पानी निकाल रही थी। अपनी थकावट दूर करने के लिए वह बीच-बीच में रुक जाती थी।

गुलजारीलाल समझ न पाया कि वह बूढ़ी ऐसा क्यों करती है! वह उसके पास जाकर बोला–"नानी! इतनी मेहनत उठाकर पानी निकालती हो, लेकिन उसे बेकार क्यों ज़मीन पर फेंक देती हो? तुम थक गयी मालूम होती हो! बाल्टी मेरे हाथ में दो। मैं पानी खींच देता हूँ।"

"बेटा, और पाँच बाल्टियाँ निकालूं तभी पिशाच आ जाएँगे!" बूढ़ी ने बाल्टी गुलजारीलाल के हाथ में दी और वह अपनी झोंपड़ी के अंदर चली गयी।

गुलजारीलाल की समझ में कुछ नहीं आया। उसने पचास बाल्टियाँ निकालकर पानी फेंक दिया। कुएँ में से दो ज़ल-पिशाच आये और सीधे किले में चले गये। फिर कुछ देर बाद वापस आये और कुएँ के अंदर चले गये। गुलजारीलाल झोंपड़ी में आराम करनेवाली बूढ़ी के पास गया और पूछा–

जगदीश श्रीवास्तव

"नानी, तुम्हारा यह पानी निकालना क्या, और कुएँ में से पिशाच निकलना क्या? आखिर ये पिशाच किले में जाकर क्या करते हैं? इस किले में कौन हैं?"

नानी ने गहरी साँस लेकर कहा—"बेटा, एक जमाने में वह क़िला मेरा था। मैं जादूगरनी हूँ। कहीं से एक सींगवाला राक्षस आया और उसने मेरे किले पर कब्जा कर लिया। मेरे मंत्रदण्ड को छीन लिया और अपने कान में छिपा लिया। उस मंत्रदण्ड के जाते ही मेरी सारी शक्तियाँ जाती रहीं। उस मंत्रदण्ड को फिर से पाने का प्रयत्न करके मेरे दोनों बेटे उसके हाथ मार डाले गये। इस कुएँ में दो पिशाच हैं। कुएँ में से कोई सौ बाल्टियाँ पानी निकालकर फेंक देता है तो वे बाहर आ जाते हैं। और राक्षस को खाना बनाकर खिलाते हैं। ज़िन्दगी-भर मुझे यह चाकरी करनी पड़ेगी।"

"नानी, तुम चिन्ता न करो! मैं तुम्हारा मंत्रदण्ड ला दूंगा।" गुलजारीलाल ने कहा।

गुलजारीलाल दिन-भर नानी की झोंपड़ी में रहा। नानी ने उसे खाना दिया। दूसरे दिन कुएँ में से सौ बाल्टियाँ पानी निकालकर फेंक दिया। पिशाच कुएँ में से बाहर आकर किले में चले गये। गुलजारीलाल भी उनके पीछे चला गया।

रसोईघर में राक्षस के द्वारा शिकार किये गये जानवरों का ढेर पड़ा था। पिशाचों ने जल्दी-जल्दी चूल्हा जलाया, माँस काटकर पकाना शुरू किया। गुलजारीलाल ने उनके पीछे जाकर दोनों की चोटियाँ पकड़ लीं और उनको उठाकर चूल्हे पर माँस की जो बड़ी हाँडी थी उसमें डाल दिया। पिशाच भी पक गये।

गुलजारीलाल ने रसोई बनायी; पहाड़ जैसे पड़े सोनेवाले राक्षस को जगाया और खाना परोसा। माँस में पिशाचों के भी

मिल जाने से शायद राक्षस को वह खाना और भी पसंद आया ।

"ओह ! आज का खाना कैसा रुचिकर है ! यह रसोई किसने बनायी ?" राक्षस ने पूछा ।

गुलजारीलाल हिम्मत करके राक्षस के सामने खड़ा हो गया और बोला-"जी, मैंने बनायी है । आज पिशाच नहीं आये ।"

राक्षस ने पहली बार गुलजारीलाल की ओर देखा, और पूछा-"तुम कौन हो ?"

"मैं पिशाचों का रसोइया हूँ ।" गुलजारीलाल बोला ।

"वाह ! तुमने बड़ा अच्छा बनाया बे ! आज से रोज आकर तुम रसोई बनाया करो ! पिशाचों से कह दो कि वे न आवे ।" राक्षस ने कहा ।

राक्षस ने पेट-भर खा लिया, थोड़ी देर डकार लेता रहा, फिर लेटकर खुर्राटे लेते सोने लगा । मौका पाकर गुलजारीलाल ने राक्षस के कान से मंत्रदंड निकाला उसे ले जाकर झोंपडीवाली बूढ़ी नानी को दे दिया ।

मंत्रदण्ड के हाथ में आते ही नानी को लगा कि उसे हजार हाथियों की ताकत मिल गयी । वह जल्दी-जल्दी किले में गयी । सोनेवाले राक्षस पर कोई मन्त्र फूंकते हुए मंत्रदण्ड फेरा । आखिर उसके सर पर मंत्रदण्ड से तीन बार मारा । तुरन्त राक्षस जलकर भस्म हो गया ।

झोंपड़ी में लौटकर जादूगरनी ने गुलजारीलाल से कहा-"बेटा, मेरे बेटे तो नहीं रहे, मैं समझूंगी तुम ही मेरे पोते हो ! इस किले में धन के ढेर पड़े हैं । तुम उठा ले जाकर आराम से जिन्दगी बिताओ ।"

जादूगरनी ने जो धन दिखाया उसे गठरी बांधकर गुलजारीलाल अपने मामा के घर लौटा । अपने दामाद को काबिल बने देख वह बहुत खुश हुआ, अपनी लड़की के साथ उसकी शादी की ।

बोलनेवाला तोता

एक गाँव में भोलाराम नामक एक किसान था। वह बड़े प्यार से एक तोता पालता था।

एक दिन शाम को भोलाराम खेत से लौट रहा था। रास्ते में उसे एक बकरा दिखाई दिया। वह बकरा भोलाराम का पड़ोसी घीसालाल का था। वह दो-तीन दिन से दिखाई न देता था, इसलिए घीसालाल उसे सब जगह ढूंढ़ता था। उसके न मिलने से घीसालाल बड़ा निराश हो गया।

भोलाराम बकरे को सब की आँख बचाकर घर ले आया और उसे मार डाला। उसका थोड़ा माँस रात को बनाया गया और थोड़ा कल के लिए रखा गया। बाकी माँस नज़दीक गाँव के अपने रिश्तेदारों को भेजने के वास्ते रखा गया। बकरे का चमड़ा लपेटकर झोंपड़ी की छत में छिपाया गया।

यह सब पिंजड़े का तोता देखता रहा।

दूसरे दिन घीसालाल भोलाराम के घर आया। इधर-उधर की बातें करते कहा कि अब तक खोया हुआ बकरा नहीं मिला है।

झट भोलाराम के ताते ने घीसालाल से बकरे की सारी कहानी कह सुनायी। घीसालाल को तोते की बातों पर यक़ीन हुआ। उसने भोलाराम से कुछ नहीं कहा। अपने घर लौटते समय भी छत में बकरे का चमड़ा देखा।

भोलाराम ने सोचा कि घीसालाल सीधे मुखिया के पास जाकर शिकायत करेगा। यह सोचकर वह चुप न रहा। तोते पर एक टीन का डब्बा औंधे मुंह रखो, उसमें छेदकर बड़ी देर तक धीरे-धीरे पानी डालता रहा।

रजनी बाला

दूसरे दिन भोलाराम के पास मुखिया का आदमी आया और कहा कि मुखिया उसको तोते के साथ बुला रहा है। भोलाराम तोते को लेकर मुखिया के पास गया।

मुखिया ने तोते से कई सवाल पूछे। तोते ने सारी कहानी सुनायी—भोलाराम बकरा कैसे लाया। कैसे काटा और उसका चमड़ा कहाँ रखा, वग़ैरह सारी बातें सुनायीं।

तोते से गवाही सुनाकर मुखिया ने भोलाराम से पूछा—"अब भी सही, तुम मान लेते हो या नहीं कि तुमने घीसालाल का बकरा हड़प लिया है?"

भोलाराम ने मुखिया से कहा—"आप उसकी बातों पर यकीन न कीजिये! वह हमेशा झूठ ही बोला करता है।"

इसके बाद उसने तोते से पूछा—"कल रात को क्या हुआ है?"

"कल रात को घना अंधेरा था। बड़ी देर तक पानी भी बरसता रहा।" तोते ने कहा। "सुनते हैं, बाबूजी! कल रात को पूर्णमासी थी, लेकिन तोता कहता है अंधेरा था। उल्टे पानी भी बरसा, बताता है, तो एकदम आसमान साफ़ था।" भोलाराम ने मुखिया से कहा।

मुखिया ने समझा कि तोता झूठ बोलता है। इस यकीन के होते ही मुखिया ने भोलाराम को बेकसूरवार मानकर घर भेज दिया।

घर पहुँचते ही भोलाराम ने अपने तोते को भगा दिया। वह जंगल में जाकर और तोतों में मिल गया। उसने उन तोतों से कहा—"छी, छी! मनुष्य बड़े पापी हैं। वे जो सोचते हैं वही हमें भी बताना है। लेकिन खुद हम बोल नहीं सकते और बोलने भी नहीं देते। बोलने पर बुरा मानते हैं।"

मनु का पुत्र नभग था। उसके कई लड़के थे। उन सब ने एक एक करके वैदिक कर्म सीखे। यज्ञ-कर्म करके गोधन कमा लिया। शादी करके गृहस्थ भी बन गये।

नभग के पुत्रों में सब से छोटे का नाम नाभाग था। जिस वक़्त उसके सब भाइयों ने गोधन बाँट लिया उस वक़्त नाभाग ब्रह्मचारी था। ब्रह्मचारी ने अपने भाइयों से अपना हिस्सा माँगा।

"तुम जाकर पिताजी से हिस्सा पूछो, वे जैसा कहेंगे, वैसा करेंगे।" नाभाग के भाइयों ने कहा।

नाभाग ने अपने पिता के पास जाकर पूछा—"भाई सब गोधन बाँट रहे हैं। मेरे हिस्सा माँगने पर, आप से पूछने को कहते हैं, न्याय कीजिये।"

नभग ने अपने छोटे पुत्र नाभाग से कहा—"उन सब ने यज्ञ-कर्म कराकर और करके भी गोधन कमा लिया है। गृहस्थ भी हो गये, इसलिए गोधन को बाँट सकें। तुमने अभी तक यज्ञ-कर्म नहीं कराये। गोधन भी कमाया नहीं। ब्रह्मचारी भी हो! उनके बराबर तुमको हिस्सा कैसे मिलेगा?"

"तो मेरी हालत क्या होगी?" नाभाग ने अपने पिता से पूछा।

"अंगीरस सत्रयाग करने जा रहे हैं। वे सब ज्ञानी हैं, लेकिन छठवें दिन में किये जानेवाले कर्म संबन्धी वैश्वदेव सूक्त वे नहीं जानते। तुम उस सत्रयाग में जाओ और वैश्वदेव के दो सूक्त पढ़कर उनको उस दिन के कर्म बताओ। इसके बाद सब तुमको कवि के रूप में मानेंगे। सत्रयाग के पूरा होते ही यज्ञ के शेष भाग को दान में लेकर चले आओ। इस तरह तुमको भी गोधन मिल जाएगा।" पिता ने नाभाग को उपदेश दिया।

यमुना राय

नाभाग अपने पिता के कहे अनुसार अंगीरसों के सत्रयाग में गया। छठवें दिन के कर्म-कांड को न जानने की हालत में वे सब चकित हो बैठे रहे। तब उनकी मदद करके यज्ञ के शेषांश को उसे देने का समझौता करवा लिया।

यज्ञ पूरा हो गया। अंगीरसों ने यज्ञ के शेष-भाग को नाभाग को सौंप दिया। वह उसे लेने ही जा रहा था कि एक काला आकार आया और याग के शेष भाग को उठाने लगा।

"इसे तो अंगीरसों ने मुझे दे दिया है। तुम क्यों लेते हो?" नाभाग ने उस काले आदमी से पूछा।

"याग का शेष भाग नियमानुसार रुद्र को मिलता है। मैं रुद्र की तरफ़ से इस गोधन को लेने आया हूँ। यदि तुमको मेरी बात पर विश्वास नहीं हो तो जाकर अपने पिता से ही पूछ लो।' काले आदमी ने कहा।

नाभाग अपने पिता के पास आया और सारी घटना सुनाकर पूछा–"रुद्र का प्रतिनिधि कहता है कि याग का शेष भाग रुद्र को ही मिलता है। पिताजी, क्या यह सत्य है?"

"सत्य ही है, बेटा! नियमानुसार याग का शेष भाग रुद्र का ही होता है।" पिता ने कहा।

नाभाग लौट आया और काले आदमी से बोला–"मेरे पिताजी ने कहा कि यज्ञ का शेष भाग रुद्र का है। इसलिए यह गोधन तुम्हीं ले जाओ!"

"तुम और तुम्हारे पिताजी दोनों सत्यवादी हैं। तुम बड़े ब्रह्मज्ञानी हो! यशस्वी बन जाओगे। यह गोधन तुम्हीं ले जाओ!" यह कहकर वह काला आदमी गायब हो गया!

दिन अच्छे हो, तो...

एक गाँव में एक किसान के एक लड़का था। उसका नाम भीमसेन था। अपने पिता के जीवित रहने तक वह सिर्फ़ खाता-पीता, दोस्तों के साथ घूमा करता। काम-वाम कुछ न करता था। वह अक्लमंद ज़रूर था, लेकिन उसने ज़िंदगी बसर करने के लिए एक भी विद्या नहीं सीखी।

पिता के मरने पर भीमसेन को अपने परा पर खड़े होने की ज़रूरत पड़ी। इसलिए वह अपने पिता के बचाये पाँच मोहरे लेकर पहले बढ़ई-बस्ती में गया। वहाँ पर उनको दो मोहरे देकर सुबह से शाम तक बढ़ईगिरी का सारा काम सीखा। दूसरे दिन शिल्पी-बस्ती में जाकर शाम के अंदर शिल्प-विद्या सीख ली। शिल्पियों को भी दो मोहरे दीं। तीसरे दिन बची हुई एक मोहर को लेकर अपने गाँव में लौटा। वहाँ पर वह बढ़ई और शिल्पी का भी काम करते आराम से ज़िन्दगी बसर करने लगा।

इतने में राजा की वर्षगांठ आयी। भीमसेन ने सोचा कि राजा को अच्छा उपहार देना है। यह सोचकर चंदन की लकड़ी से एक अच्छी पेटी तैयार की और उसपर बढ़िया नक्काशी की। इसके बाद संगमरमर से एक सुंदर मूर्ति इस तरह तैयार की जिसके एक तरफ़ देखने से विष्णु का रूप दिखाई देता है और दूसरी तरफ़ देखने पर शिवजी का रूप दिखाई देता है। उस मूर्ति को चन्दन की पेटी में रखकर भीमसेन ने राजा की वर्षगाँठ के दिन पुरस्कार के रूप में वह पेटी दे दी।

उस पुरस्कार को देख राजा बहुत खुश हुआ। उसने भीमसेन की कारीगरी पर मुग्ध होकर पाँच हज़ार मोहरे इनाम में

महावीर प्रसाद

दीं। भीमसेन उस इनाम को लेकर अपने गाँव में वापस आया।

इनाम पाये हुए भीमसेन को देख पड़ोसी गाँव के एक शिल्पी के मन में ईर्ष्या पैदा हुई। उसने सोचा कि राजा से और भी ज़यादा इनाम पाना चाहिए। यह सोचकर उसने एक ऐसा शिल्प तैयार किया जिसमें उस देश का राजा अपने दुश्मन को हराकर वध कर रहा है। उसने एक बढ़ई से शिल्प को रखने लायक एक अच्छी पेटी तैयार करायी और पेटी के साथ शिल्पको ले जाकर राजा को सौंप दिया।

उस शिल्प को देखते ही राजा गुस्से में आ गया, वहाँ के लोग हाहाकार करने लगे; क्योंकि शिल्प में मारा जानेवाला आदमी बिल्कुल राजा-जैसा था, मारनेवाले आदमी में राजा की आकृति बिल्कुल न थी।

राजा ने उस शिल्प को वहीं तुड़वा दिया और शिल्पी को पचास कोड़े लगाने का दंड दिया। इसपर शिल्पी की ईर्ष्या भीमसेन के प्रति क्रोध में बदल गयी। उसने एक रात को भीमसेन के घर में आग लगवा दी। घर के साथ भीमसेन की सारी जायदाद जल-भुनकर राख हो गयी।

भीमसेन अब गरीब हो गया। उसने बढ़ई का काम करके दिन बिताने का निश्चय किया। कंधे पर कुल्हाड़ी डाले लकड़ी काटने जंगल की ओर गया। रास्ते में पत्थरों के बीच चलते समय एक पैर का नख पत्थर से ठोकर खाकर निकल आया, इससे उसे बड़ा दर्द होने लगा। भीमसेन ने गुस्से में आकर उस पत्थर को हटा दिया। उस पत्थर के नीचे उसे एक विचित्र फ़लक दिखाई दिया।

पहाड़ी पत्थरों के नीचे कौन ऐसा फ़लक रख सकता है? किसी उद्देश्य से यह फ़लक

रखा होगा! यह सोचकर उसने फ़लक पर के और पत्थर हटा दिये। फ़लक उठाने पर उसके नीचे एक गड्ढ़ा और गड्ढ़े में बहुत-से गहने-रुपये दिखाई दिये। भीमसेन को लगा कि ये सब चोर-डाकुओं द्वारा छिपाया हुआ माल है। वह चुपचाप गहने-रुपयों को लेकर घर लौटा।

भीमसेन को दूसरी बार अमीर हुए देख गाँव का मुखिया ईर्ष्या से भर उठा। उसने भीमसेन को बुलाकर पूछा–"तुमको ये रुपये-गहने कहाँ मिले?"

"मुझे पहाड़ी पत्थरों के नीचे मिले हैं।" भीमसेन ने सच्ची बात बतायी।

तुरंत मुखिया ने कहा–"तुमने कैसी भूल की? निधि तो राजा की संपत्ति है! उसमें से एक पाई भी लोगे तो तुमको दंड देने का मुझे अधिकार है। जो हुआ सो हो गया। वे सब गहने-रुपये लाकर मुझे दे दो। मैं राजा के ख़ज़ाने में भिजवा देता हूँ।"

भीमसेन ने सारे गहने–रुपये मुखिया के के घर पहुँचा दिये। मुखिया ने थोड़ा हिस्सा रख लिया, बाक़ी राजा के पास भिजवा दिया।

भीमसेन को वहाँ के लोगों और गाँव के प्रति विरक्ति पैदा हुई। उसने निश्चय

किया कि किसी दूसरे देश में जाकर जीना अच्छा होगा। मैं कारीगरी भी जानता हूँ। कहीं भी जाकर मजे से जिन्दगी काट सकता हूँ। यह सोचकर अपने औजार ले दूसरे राज्य के लिए रवाना हुआ।

रास्ते में जंगल के बीच कई गाँव आये। एक गाँव में भोजन करते, दूसरे गाँव में विश्राम करते भीमसेन ने कई दिन यात्रा की और एक दिन सँध्या के समय एक गाँव में पहुँचा। वहाँ पर एक घर से रोने की आवाज सुनाई दी।

भीमसेन ने झाँककर उस घर में देखा—सोलह साल की लड़की रोती हुई दिखाई दी।

"रोती क्यों हो? लगता है, तुम इस घर में अकेली हो! क्या तुम्हारे कोई नहीं?" भीमसेन ने पूछा।

"मुझे बचपन में ही चोर उठा ले गये और इस जंगल में छोड़ दिया। इस घर के मालिक ने मुझे पाल-पोस कर बड़ा किया; आज सुबह वे भी मर गये। अब मेरे कोई न रहे! रोने के सिवा मेरे कुछ नहीं बचा!" लड़की ने कहा। वह अपने माँ-बाप का नाम न बता सकी।

"तुम्हारे कोई न हो तो मेरे साथ चलो! हम दोनों शादी करके गृहस्थी शुरू करेंगे।" भीमसेन ने कहा।

भीमसेन की यह बात सुनकर लड़की की जान में जान आ गयी। उसने उठकर रसोई बनायी। लड़की को ध्यान से देखने पर उसके बाएँ पैर पर एक घाव का दाग भीमसेन को दिखाई दिया। तुरन्त उसे बचपन में सुनी हुई एक कहानी की याद आयी।

वह कहानी यों थी—

अपने देश के राजा की एक लड़की थी। चार साल की उम्र में वह लड़की अचानक गायब हो गयी। उसकी बड़ी खोज करायी गयी, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। कहते थे कि उस लड़की के बाएँ पैर पर छुरी के

वार का एक दाग था। भीमसेन के सोचने पर यह भी ठीक ही मालूम हुआ कि लड़की की उम्र का हिसाब लगावे तब भी वह राजा की ही लड़की हो सकती है। यदि वह सचमुच राजकुमारी है तो उसके साथ विवाह करना राजा के प्रति अन्याय होगा। उस लड़की को राजा को सौंपना ही उसका प्रमुख कर्तव्य है।

यह सोचकर भीमसेन उस लड़की को साथ ले राजधानी के लिए रवाना हुआ। बचपन से उसने जो कपड़े और चीजें छिपा ली थीं, उनको वह अपने साथ ले आयी। उन वस्तुओं को देख राजा ने बड़ी आसानी से समझ लिया कि वह उसी की लड़की ही है। बारह साल पहले जो लड़की खो गयी थी, आज अचानक उसे पाने पर राजभवन में अपार आनंद छा गया। राजा सोच रहा था कि भीमसेन राजकुमारी को सुरक्षित राजमहल में पहुँचा दिया है, उसे कैसा पुरस्कार दिया जाय! राजकुमारी ने सलाह दी कि उसका विवाह उस युवक के साथ करना उचित होगा।

"उस युवक में किसी भी प्रकार का स्वार्थ नहीं है। जब मैं अभागिन थी तब उसने मुझसे शादी करने की इच्छा प्रकट की। मैंने मान भी लिया, लेकिन बाद को मेरे पैर पर दाग देख उसके मन में शंका हुई और यहाँ मुझे ले आया। अगर वह मुझे एक और जगह ले जाता और मुझसे शादी कर लेता तो कोई रोक न पाता।" राजकुमारी ने कहा।

राजा को मालूम हुआ कि उसकी बेटी के मन में भीमसेन के प्रति बड़ा आदर का भाव है, तब राजा ने राजकुमारी का विवाह भीमसेन के साथ किया। इस समाचार के मालूम होते ही भीमसेन के गाँव का मुखिया संन्यास लेकर घूमने चला। पड़ोसी गाँव का शिल्पी देशाटन करने गया।

विष्णु की माया

ध्रुव जब घोर तप कर रहा था तब इंद्र ने उसका तप भंग करने के लिए विरध नामक गन्धर्व को राक्षस के रूप में भेजा। तपस्या में मग्न ध्रुव को राक्षस रूप में आकर डरानेवाले विरध को एक मुनि ने देखा और उसे शाप दिया–"तुम सचमुच राक्षसी बन जाओ।"

इस तरह विरध अपने देवत्व को खोकर शबरी नदी के किनारे रहने लगा। जो भी आदमी मिलता उसे खा डालता और राक्षस का जीवन बिता देता। विरध सब तरह से राक्षस ही था, लेकिन उसे दिव्य दृष्टि प्राप्त थी। तीनों लोकों में जो भी घटना होती उसे तुरन्त मालूम हो जाती।

शबरी और गोदावरी नदियों के संगम पर एक आश्रम था जिसमें कई मुनि रहा करते थे। आश्रम के मुनि-बालक एक दिन जंगल में समिधा इकट्ठा करने गये। उसी समय वहाँ पर विरध आया। उसको देखते ही सभी मुनि-बालक डरकर भाग गये; लेकिन भरत नामक एक बालक हिम्मत के साथ वहीं खड़ा रहा। उसकी हिम्मत पर विरध को बड़ा आश्चर्य हुआ।

जो मुनि-बालक वहाँ से भाग गये थे उन लोगों ने भरत के पिता के पास जाकर कहा–"तुम्हारा लड़का राक्षसों के हाथ में पड़ गया है।" भरत का पिता दौड़ते हुए आया और अपने पुत्र को वश में किये हुए विरध से प्रार्थना की–"मेरे यही एक लड़का है। चाहे तो मुझे खाकर उसे छोड़ दो।"

"अच्छा, एक काम करो। मेरे साथ फाँसा खेलो। उसमें तुम जीत जाओगे तो मैं तुम्हारे लड़के को छोड़ दूंगा।" विरध ने कहा।

भरत का पिता उससे फाँसा खेलकर हार गया।

प्रेम भाटिया

"तुम को एक और मौक़ा देता हूँ। कल सुबह फिर आऊँगा। तब तक तुम ऐसी जगह लड़के को छिपाओ जहाँ छिपाने से मैं जान न सकूँ। फिर कभी मैं उसको कष्ट न दूँगा।" विरघ ने कहा।

भरत को उसका पिता अपने आसन में ले गया और उसे बचाने के लिए उसने अपनी सारी तपस्या की शक्ति लगाने का संकल्प किया। उसने होम करके ब्रह्मा की प्रार्थना की। ब्रह्मा प्रत्यक्ष हो गया।

"मेरे पुत्र को राक्षस की आँखों से बचाकर कल सुबह तक उसको छिपाइये और उसके प्राणों की रक्षा कीजिये।" भरत के पिता ने ब्रह्मा से विनती की।

ब्रह्मा भरत को अपने लोक में ले गये और अपने आसन पद्म की एक पंखुडी के रूप में भरत को बदल दिया।

दूसरे दिन सवेरे विरघ ने आकर भरत के पिता से कहा–"मूर्ख, तुम्हारे पुत्र को ब्रह्माजी अपने आसन पद्म की पंखुडी के रूप में बदल दे तो क्या मैं नहीं पहचान सकता? इस बार भी तुम हार गये। एक और मौक़ा तुमको देता हूँ। इस बार तुम अपने लड़के को और भी सावधानी से छिपाओ। कल

सुबह फिर आऊँगा।" यह कहकर विरध चला गया।

इस बार भरत के पिता ने शिवजी से प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना पर प्रसन्न होकर शिवजी प्रत्यक्ष हुए। भरत के पिता ने जिस प्रकार ब्रह्मा से प्रार्थना की थी उसी प्रकार शिवजी से भी प्रार्थना की।

शिवजी भरत को कैलास में ले गये। उसे एक कुमुद के रूप में बदल दिया और पार्वती के कान में लगा दिया।

विरध ने दूसरे दिन सुबह आकर भरत के पिता से कहा—"तुम्हारा पुत्र कैलास में पार्वतीजी के कान में कुमुद बनकर छिपा हुआ है। मैं पहचान गया। उसे छिपाने के लिए तुम्हें और एक मौक़ा देता हूँ। लेकिन यही आखिरी मौक़ा है।" यह कहकर वह चला गया।

उस दिन भरत के पिता ने विष्णु की प्रार्थना की, विष्णु के प्रत्यक्ष होने पर उसने उसी प्रकार विनती की जिस प्रकार ब्रह्मा और शिवजी से इसके पहले दो बार की थी। विष्णु भरत को साथ लेकर चले गये।

दूसरे दिन विरध आया। उसने अपनी सूक्ष्म दृष्टि से तीनों लोकों को छान डाला; लेकिन भरत का कहीं पता न चला। उसने आवेश में आकर चिल्लाकर कहा—"मुनि-बालक! तुम कहाँ हो?"

"यहीं हूँ।" भरत के कण्ठ ने अस्पष्ट रूप में जवाब दिया।

"मैं तुम्हारा कुछ न बिगाडूंगा, मेरे सामने आओ।" विरध ने कहा।

तुरन्त विरध का कलेजा फाडकर भरत बाहर आया। राक्षस मरकर नीचे गिर पड़ा। इसके साथ विरध का शाप भी जाता रहा। वह फिर गन्धर्व बन गया। भरत के पिता को प्रणाम करके वह स्वर्गलोक में चला गया।

झूठी गवाही

एक ब्राह्मण अपने गाँव से दूसरे गाँव में पगडंडी से होकर चला जा रहा था। रास्ते में एक आदमी अपने सर पर तेल की हाँडी लिये सामने आया। ब्राह्मण ने समझ लिया कि हाँडी में तेल है। उसने तेली से पूछा–"क्यों भैया! यह तेल कैसे दिया?"

"नौ रुपये।" तेली ने कहा।

"पाँच रुपये में दोगे?" ब्राह्मण ने पूछा।

"यह हाँडी-भर तेल तुमको पाँच रुपये में कौन देगा? लगता है कि तुम्हारा चेहरा तेल खरीदने का नहीं है; चलो, चलो तीन रुपये में भी दूँ तो भी तुम खरीद सकोगे, इसमें मुझे संदेह है।" तेली ने अंटसंट बक दिया।

ब्राह्मण को गुस्सा आया। उसने तेली से कहा–"मोल-भाव करने का मुझे अधिकार है। अगर तुमको देना है तो दो, नहीं तो अपने रास्ते चलते बनो। अंटसंट बकने का फल अच्छा नहीं होता! तुम भी कैसे बदतमीज़ हो!" यह कहते ब्राह्मण अपने हाथ हिलाते तेली की ओर आगे बढ़ा।

ब्राह्मण को अपनी ओर बढ़ते देख, तेली ने सोचा कि ब्राह्मण का हाथ लगने से तेल की हाँडी गिर जाएगी, इसलिए तेली ने अपना सर थोड़ा पीछे खींच लिया। परिणामस्वरूप तेल की हाँडी नीचे गिर गयी। सारा तेल मिट्टी में मिल गया। साथ ही हाँडी भी दब गयी।

ब्राह्मण यह सोचकर खुश होते जल्दी-जल्दी आगे चला गया कि तेली को अच्छी सजा मिल गयी। तेली अपने इस नुक़सान पर रोते हुए वहीं पड़ा रहा।

इस बीच में लक्ष्मणसिंह नामक एक आदमी उस रास्ते से जा निकला। मिट्टी में फैले तेल और उदास तेली को देख पूछा–"क्या हो गया है भैया?"

मनमोहन चौधरी
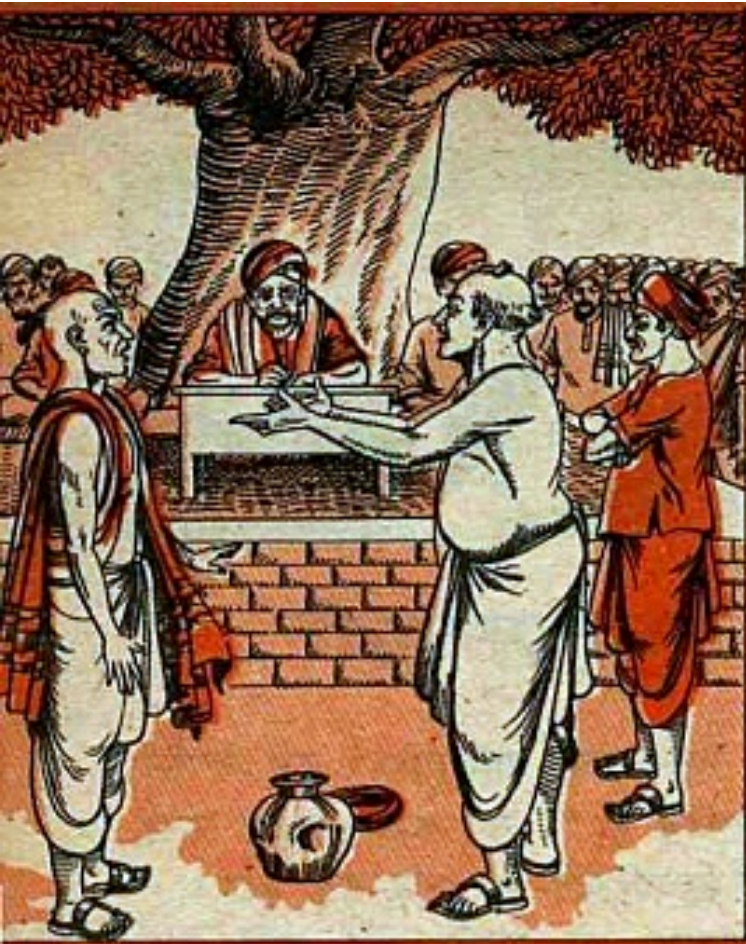
तेली ने सारी कहानी कह सुनायी।

लक्ष्मणसिंह ने उसे समझाया—"तुमको इतना नुक़सान हुआ है! तुम्हारी हालत क्या होगी? मेरे कहे अनुसार मुखिया के पास जाकर शिकायत करोगे तो तुमको तेल और हांडी के दाम मिल जाएँगे। तुम्हारी तरफ़ से मैं गवाही दूंगा। गवाही के लिए मुझे केवल पाँच रुपये दो।"

"शिकायत कैसे करूँ? बताओ तो सही!" तेली ने पूछा।

लक्ष्मणसिंह ने उसे सारी बातें समझा दीं। तेली को लगा कि उसकी शिकायत पर उसे तेल और हांडी के दाम मिल जाएँगे। तेली ने मुखिया के पास जाकर शिकायत की। मुखिया ने ब्राह्मण को भी बुला भेजा। उसने तेली से पूछा कि सारी घटना सुनावें।

तेली ने कहा—"मैं तेल की हांडी सर पर रखकर दूसरे गाँव में जा रहा था, इस ब्राह्मण ने सामने आकर तेल का दाम पूछा, मैंने नौ रुपया बताया। ब्राह्मण ने तीन रुपये में पूछा। मैंने देने से इनकार किया। तब ब्राह्मण ने गुस्से में आकर मेरे सर पर की तेल की हांडी को नीचे गिरा दिया और मुझे बुरी तरह से पीटा। इतने में लक्ष्मणसिंह नामक एक आदमी उधर से आ निकला, उसने मेरी रक्षा की; नहीं तो यह ब्राह्मण मेरी जान ही ले लेता। इसलिए मेरा न्याय कीजिये।"

"विप्रवर, तुम क्या कहते हो?" मुखिया ने पूछा।

ब्राह्मण ने आदि से अंत तक सारी कहानी सुनायी।

"तुम्हारे कोई गवाह है?" मुखिया ने फिर ब्राह्मण से पूछा।

"सरकार, यह घटना जब जहाँ पर हुई थी, तब वहाँ पर कोई न था।" ब्राह्मण ने कहा।

इसके बाद लक्ष्मण सिंह ने गवाही देते हुए तेली के प्रत्येक शब्द का समर्थन किया। शिकायत की गवाही पाकर मुखिया ने तेली को ब्राह्मण से नुक़सान मद्दे पच्चीस रुपये दिलाये।

कचहरी से बाहर आते ही लक्ष्मण सिंह ने तेली से कहा—"देखा, मेरी सलाह से तुमको कैसे फ़ायदा हुआ? अब मेरे पाँच रुपये निकालो।"

धोखे की आदत में आया हुआ तेली बोला—"तुम्हारे पाँच रुपये कैसे? पहले ही तुमने मुझसे जो लिये, अब फिर क्यों दूँगा?"

लक्ष्मण सिंह को बड़ा क्रोध आया।

वह दौड़कर गाँव जानेवाले ब्राह्मण के पास पहुँचा और उससे विनती की—"ब्राह्मणजी, मुखिया अव्वल दर्जे का दूर्त है। मैंने नहीं सोचा था कि तुमको ऐसी सजा देगा। मैंने तेली की ओर से झूठी गवाही दी है, लेकिन पाँच रुपये के लोभ में पड़कर ही मैंने ऐसा किया है। अगर तुम मेरी बात सुनकर फिर शिकायत करोगे तो तुम्हारी सजा रद्द हो जाएगी।" यह कहते उसने ब्राह्मण को समझाया कि फिर से शिकायत कैसे करनी है।

ब्राह्मण थोड़ी देर तक सोचता रहा, फिर कहा—"तुम्हारी सलाह बड़ी अच्छी है। इस सलाह के लिए तुम ये दस रुपये ले लो।" यह कहकर ब्राह्मण ने लक्ष्मण सिंह को दस रुपये दे दिये।

दोनों मिलकर फिर कचहरी में गये। ब्राह्मण ने शिकायत की कि कचहरी से जाते समय तेली ने उसे पीटा है, लक्ष्मण सिंह ने मुझे बचाया है।

मुखिया ने तेली को बुला भेजा और पूछा—"तुम्हारा जो नुक़सान हुआ था, उसे मैंने दिलाया था, फिर ब्राह्मण को क्यों तुमने पीटा?"

"मैंने नहीं पीटा। उस ब्राह्मण को मैंने नहीं देखा।" तेली ने कहा।

लक्ष्मण सिंह ने गवाही दी कि तेली ब्राह्मण को मारने गया था, लेकिन उसीने ब्राह्मण को बचाया है।

"अब तुम क्या जवाब दोगे?" मुखिया ने तेली से पूछा।

"सरकार, इनकी बातों पर यक़ीन न कीजिये। आपने मुझे नुक़सान मद्दे जो पच्चीस रुपये दिलायें, इससे नाराज़ होकर इन दोनों ने झूठी गवाही की सृष्टि की है।" तेली ने कहा।

"मैं इस बात पर यक़ीन कर सकता हूँ कि ब्राह्मण ने झूठी गवाही दिलायी है। लेकिन यह गवाह पहले तुम्हारा ही गवाह जो था! यह क्यों झूठ बोलेगा!" मुखिया ने पूछा।

तेली मुश्किल में पड़ा।

तब ब्राह्मण ने मुखिया से कहा—"आप तो सिर्फ़ गवाही चाहते हैं, लेकिन सचाई नहीं। इस आदमी ने जो झूठी गवाही दी, उसी के अनुसार आपने मुझसे तेली को पच्चीस रुपये दिलायें। उसने इस बार मुझसे शिकायत कराकर झूठी गवाही देने का वचन दिया और मुझसे पहले ही दस रुपये ले लिये। इस बार भी आप मुझे गवाही के आधार पर तेली से रुपये दिलाइये।" ब्राह्मण नें मुखिया से विनती की।

मुखिया का सर अपमान से झुक गया।

लक्ष्मण सिंह की तलाशी ली गयी तो ब्राह्मण के दिये दस रुपये मिल गये। तेली ने भी मान लिया कि उसनें जो शिकायत की थी, वह भी झूठी शिकायत थी। मुखिया ने ब्राह्मण के रुपये उसे दिलाकर लक्ष्मण सिंह को क़ैदखाने में डलवा दिया।

उधार वसूली

एक गाँव में श्याम साहू नामक एक अमीर था। जो भी पूछता, उसे वह उधार देता और बड़ी होशियारी से उधार की रक़म वसूल कर लेता।

दूसरे गाँव में एक और धनी था। उसका नाम धन्ना सेठ था। धन्ना सेठ को श्याम साहू के बारे में थोड़ी बहुत खबर मिली–"श्याम साहू लिखा-पढ़ी और गवाह के बिना भी उधार देकर वसूल कर सकता है। देखूँ, मैं भी कि वह कैसे वसूल करता है।" धन्ना सेठ ने मन में सोचा।

धन्ना सेठ एक दिन श्याम साहू के घर आया और बोला–"मेरा गाँव फ़लाना है। मेरा नाम धन्ना सेठ है। मुझे एक हज़ार रुपये की सख़्त ज़रूरत आ पड़ी है। आप देंगे तो ले जाने आया हूँ।"

श्याम साहू ने धन्ना सेठ के बारे में पहले ही सुन रखा था कि वह इन्साफ़ को रद्दो-बदल करने और झगड़े पैदा करने में अपना सानी नहीं रखता। श्याम साहू को लगा कि वह धोखा कैसे देता है, यह भी देखूँ! यह सोचकर उसने धन्ना सेठ को एक हज़ार रुपये उधार में दिया।

एक साल बीत गया। श्याम साहू ने धन्ना सेठ के नाम एक चिट्ठी लिखी कि उधार की रक़म भेज दें।

उस चिट्ठी को देख धन्ना सेठ ने फिर जवाब यों लिखकर भेजा–"मैं तुम्हारे कर्ज़दार ज़रूर हूँ, लेकिन मैं वह रक़म इस वक़्त नहीं दे सकता हूँ। मैं बबूल के बीज खरीदने जाता हूँ। लौटने पर दूँगा।"

एक और साल बीत गया। धन्ना सेठ ने कर्ज़ में से थोड़ी भी रक़म नहीं चुकायी। श्याम साहू ने फिर एक आदमी के हाथ चिट्ठी लिखकर भेजा। इस बार भी धन्ना सेठ ने जवाब लिख भेजा कि वह

बबूल के बीज खरीदने अभी तक नहीं गया है, लौटने पर ज़रूर भिजवा दूंगा।

श्याम साहू की समझ में नहीं आया कि घन्ना सेठ का बबूल के बीज लाने और कर्ज चुकाने के साथ कैसा संबंध है! इस रहस्य का पता लगाने के ख्याल से श्याम साहू खुद घन्ना सेठ के घर गया और पूछा–"तुम कहते हो कि बबूल के बीज खरीदकर लौटने पर मेरे रुपये चुकाओगे। लेकिन मेरी समझ में नहीं आता कि इन दोनों का क्या संबन्ध है?"

"पहाड़ पर बबूल के पेड़ हैं। उनके नीचे बबूल के बीज गिरे होते हैं। मुझे जाकर उन बीजों को इकट्ठा कर लाना है। मैंने सुना है कि पहाड़ की तलहटी से ऊपर तक रास्ता बनानेवाले हैं। रास्ते के दोनों तरफ़ बबूल के बीज बोने हैं। वे बीज उगकर बड़े पौधे और पेड़ बनेंगे। जब उस रास्ते कपास की गाड़ियाँ निकलेंगी तो थोड़ा-थोड़ा कपास पेड़ की डालों से लग जाएँगा। मैं उस कपास को इकट्ठा कर बेच डालूंगा। उससे जो रुपये मिलेंगे, तब मैं तुम्हारा उधार चुकाऊँगा। इसलिए मेरे बबूल के बीज लाने जाने में और तुम्हारा उधार चुकाने में संबन्ध ज़रूर है।" घन्ना सेठ ने जवाब दिया।

"ओह, ऐसी बात है! अब मैं समझ गया!" यह कहकर श्याम साहू घन्ना सेठ से विदा लेकर अपने गाँव लौट आया।

इसके बाद और कई महीने बीत गये! घन्ना सेठ ने सोचा कि श्याम साहू हार गया है। एक दिन श्याम साहू ने घन्ना सेठ को निमंत्रण भेजा कि सत्यनारायण व्रत का आयोजन किया गया है, इसलिए सेठ साहब परिवार के साथ पधारें।

घन्ना सेठ ने सोचा कि अब क्या किया जाय? निमंत्रण पाकर न जाने से श्याम साहू सोचेगा कि उससे डरकर नहीं गया

हूँ । यदि वह जायगा तो चार लोगों के बीच उधार की बात चलाकर अपमान कर बैठेगा। वह नहीं जायगा तो उसकी पत्नी भी अकेली नहीं जा सकेगी । आखिर अपनी बूढ़ी माँ को अकेली ही श्याम साहू के घर भेज दिया।

श्याम साहू ने धन्ना सेठ की माँ से कहा--"बूढ़ी माई ! तुम्हारे लड़के ने मुझसे एक हज़ार रुपये उधार लिया है। उसने यही जवाब दिया है कि उधार चुकाने तक बूढ़ी माँ को गिरवी रख लो। इसीलिए उसने तुमको मेरे घर भेजा है। सब को यह मालूम हो जायगा कि तुम मेरे यहाँ गिरवी में हो, तो तुम्हारे बेटे की इज्जत जाती रहेगी ! इसलिए तुम मेरे भीतरी कोठरी में रहो। इसके बाद तुम्हारा बेटा रुपये चुकाकर तुमको घर ले जायगा।"

बूढ़ी माँ अपने बेटे को कोसते श्याम साहू की भीतरी कोठरी में रहने लगी।

इसके बाद श्याम साहू ने एक अफ़वाह उड़ाई कि फ़लाने गाँव के धन्ना सेठ की माँ श्याम साहू के घर आयी है। वह रोज श्याम साहू को गालियाँ सुनाती थी, आखिर श्याम साहू ने गुस्से में आकर बूढ़ी को पीटा तो वह मर गयी। इसलिए श्याम साहू ने लाचार होकर आधी रात के समय सब की आँख बचाकर गड़वा दी।

यह अफ़वाह धन्ना सेठ के कानों में भी पड़ी। उसकी माँ के श्याम साहू के घर गये एक सप्ताह बीत चुका था। धन्ना सेठ एक दिन चुपके से श्याम साहू के घर आया और शांति से इस तरह बोला, मानों वह अफवाह की बात बिलकुल जानता न हो। उसने कहा—"मैं अपनी माँ को ले जाने आया हूँ। वह एक सप्ताह से तुम्हारे घर रह रही है और कितने दिन रहेंगी।"

श्याम साहू ने गहरी साँस लेकर कहा—"बेचारी बड़ी बूढ़ी हो गयी थी! हमारे शरीर शाश्वत नहीं हैं। हम इस दुनिया के चंद दिन के मेहमान जो ठहरें।"

धन्ना सेठ नाराज़ हो गया और कहा—"मैंने तुम्हारा कर्ज़ नहीं चुकाया तो तुम मेरी माँ की हत्या कर डालोगे? तुरंत मुझे अपनी माँ को दिखाओ।"

श्याम साहू ने कहा—"मुझे माफ़ करो! तुम्हारे यहाँ से उधार वसूल करना जितना कठिन है, उतना ही तुम्हारी माँ को दिखाना भी कठिन और असंभव है।"

तब तक लोग इकट्ठे हो गये थे। धन्ना सेठ ने सब के सामने कहा—"आप लोगों ने श्याम साहू की बातें सुन ली हैं। मैं अभी अपने गाँव जाकर लौटा आता हूँ और इसकी खबर लेता हूँ!" यह कहते वह जल्दी-जल्दी अपने गाँव गया। रक़म एक हज़ार रुपये ले आया और बोला—"लो, तुम्हारे रुपये! अब मेरी माँ को दिखाओ! नहीं तो तुम्हारे ऊपर हत्या का इल्ज़ाम लगवाकर कचहरी में नालिश करूँगा।"

श्याम साहू एक हज़ार रुपये लेकर घर के भीतर चला गया। बूढ़ी को बाहर ले आकर बोला—"लो, तुम अपनी माँ को! ले जाओ यहाँ से!"

धन्ना सेठ के मुँह से बात तक न निकली। वह लज्जित हो अपनी माँ को लेकर अपने गाँव लौटा।

इन्द्र और कृष्ण परस्पर परामर्श के बाद शचिदेवी और सत्यभामा को साथ लेकर अदितिजी को देखने गये। सबने अदिति को प्रणाम किया। इन्द्र ने उनको कर्ण-कुण्डल वापस करते हुए कहा कि कृष्ण किस प्रकार नरकासुर पर विजय प्राप्त कर चुके हैं, आदि से अंत तक सारी कहानी बतायी।

अदिति ने कृष्ण को आशीर्वाद दिया-"बेटे, तुमने अपने अनुपम बाहु-बल के साथ मेरी सारी तकलीफ़ों को दूर किया। तुम्हारा जन्म अपूर्व और धन्य है! इन्द्र की तरह तुम भी देवताओं के सहायक बने रहो! पृथ्वी पर तुमको कोई न हरा सकेगा। नारियों में कोई भी सत्यभामा की समता नहीं कर सकती, यह बात तो मशहूर है ही। जब तक तुम मानव के अवतार में इस पृथ्वी तल पर विराजमान रहोगे तब तक सत्यभामा का यौवन भी बना रहे!"

इसके बाद कृष्ण अदिति और इन्द्र से विदा लेकर सत्यभामा के साथ गरुड़-वाहन पर सवार हुए और नन्दन-वन आदि देवताओं के उद्यानों में विहार किया। वहाँ पर कई कल्प-वृक्ष थे। उनके फूलों पर भ्रमर मण्डरा रहे थे। कल्प-वृक्ष की डालों पर झूले डालकर देवकन्याएँ झूल रही थीं। सभी लोगों का संचार समाप्त करके आये हुए सिद्ध, मिथुन उनकी छाया में विश्राम कर रहे थे। उन कल्प-वृक्षों के

२१. पारिजाता पहरण

बीच कृष्ण ने पारिजात को देखा। वह देवताओं के लिए बहुत ही पवित्र है। उस पर शचिदेवी का प्रेम है। उसका यश तीनों लोकों में प्रसिद्ध है। उसके पास जानेवालों को अपनी जाति की याद हो आती है।

सत्यभामा पर पारिजात की सुगन्धी के लगते ही उसके मन में यह भाव पैदा हुआ कि सभी देवता-नारियों में वही श्रेष्ठ है! उसे अपार आनंद हुआ। उस वृक्ष को दिलाने की कृष्ण से बड़ी विनयपूर्वक प्रार्थना की।

कृष्ण ने तुरन्त पारिजात वृक्ष को जड़ के साथ उखाड़ दिया और उसे गरुड़ पर रखकर रवाना हो गये। तब देवताओं के वनों की रक्षा करनेवाले कृष्ण को रोककर उनसे युद्ध करने लगे। कृष्ण ने अपने बाणों से सबको मार गिराया। जल्द ही यह बात इन्द्र को मालूम हुई।

इन्द्र जानते हैं कि कृष्ण तीनों लोकों के रक्षक हैं। उन्हें पारिजात वृक्ष को ले जाने में कोई आपत्ति ही नहीं है, तो भी इन्द्र अपने ऊपर कोई नियंत्रण न रख सका और देवताओं को साथ लेकर कृष्ण को रोका, उनपर वज्रायुध फेंका। कृष्ण ने उसे बीच में ही रोक दिया। इन्द्र की हार हुई। आखिर वे मान गये कि भूलोक में कृष्ण के रहते समय तक पारिजात वहीं रहेगा। इसके बाद इन्द्र कृष्ण की अनुमति लेकर अपने निवास को चले और कृष्ण द्वारका के लिए रवाना हुए।

गरुड़ ने पारिजात के साथ सत्यभामा और कृष्ण को उनके महल पर उतार दिया। कृष्ण ने पांचजन्य बजाकर अपने आगमन की सूचना सबको दी। सब लोग बड़े आनंद के साथ उनके पास दौड़कर आये। कृष्ण ने बड़ों को नमस्कार किया और छोटों के साथ गले लगाकर कुशल पूछा।

प्रद्युम्न ने पारिजात वृक्ष को अंत:पुर में पहुँचा दिया। उस दिव्य पारिजात वृक्ष के पास जो भी गया उसे पूर्व जन्म की बातें याद आने लगीं। उसकी महिमा को देख सब लोग अचरज में आ गये। उसके बाद उसे उचित जगह रोपा गया।

नरकासुर के जेल-खाने से विमुक्त हुई सभी औरतें द्वारका कुशल पूर्वक पहुँचायी गयी थीं, उन सबके साथ कृष्ण ने विवाह किया।

इसके बाद कृष्ण ने गरुड़ का उचित रीति से सम्मान किया और उसे देवलोक में वापस जाने की अनुमति दी। गरुड़ कृष्ण को यह वचन देकर चला गया कि कृष्ण जब भी उसकी याद करेंगे तब वह उनकी सेवा में हाज़िर होगा।

एक दिन कृष्ण ने सभा बुलायी। उसमें नरकासुर से प्राप्त सभी वस्तुओं को उग्रसेन, उसकी पत्नी और बाकी लोगों में बाँट दिया, जो बचे रहे उनको खज़ाने में रखवा दिया।

सत्यभामा रोज़ पारिजात फूलों से अपने को सजाती और अपने सौतों में भी बाँट देती थी। इन्द्र को इस बात का दुख था कि उसके वन में पारिजात वृक्ष नहीं है। यह सोचकर वह शचिदेवी की ओर बड़ी दीनता से देखता।

एक बार दुर्योधन ने हस्तिनापुर में एक यज्ञ किया और उसमें सभी राजाओं को निमंत्रण भेजा। यह पूरा हुआ। यज्ञ में आये हुए सभी राजा कृष्ण का वैभव सुनकर उनसे मिलना चाहते थे। इसलिए उन सबने एक दूत के द्वारा द्वारका जाने की खबर भेजी। कृष्ण ने उसी दूत के ज़रिये सब को निमंत्रण भेजा। धृतराष्ट्र के सौ पुत्र, उनके सामंत, पांडव, अठारह अक्षौहिणी सेना के साथ चले आये और रैवतकाद्रि के समीप ठहरे।
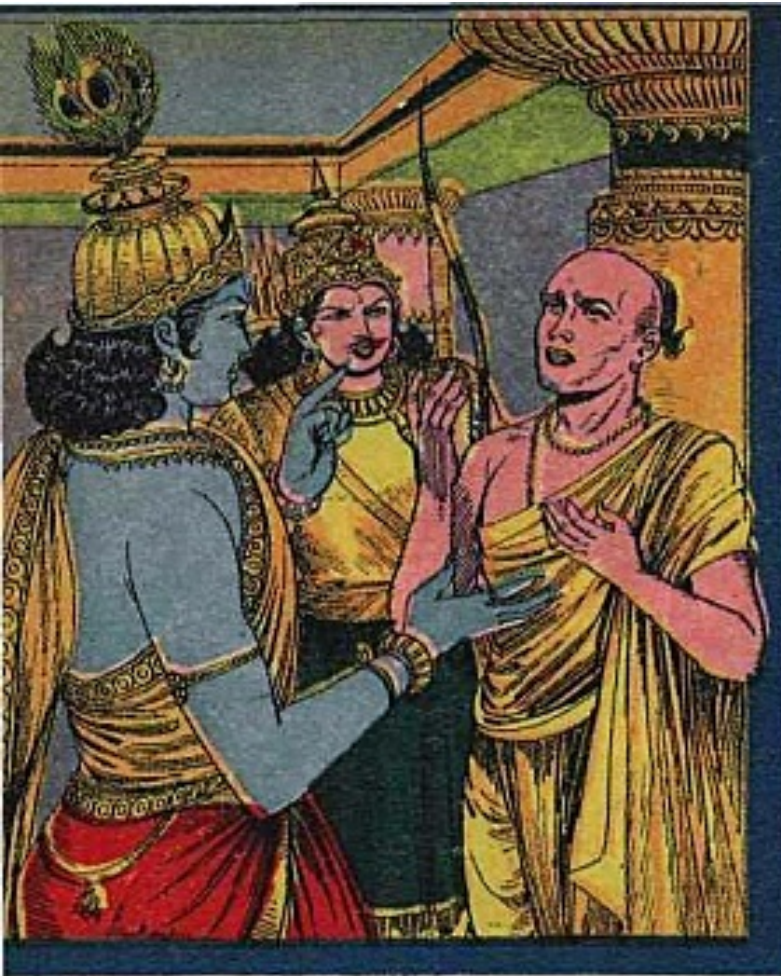
बलराम, सात्यकि, प्रद्युम्न और बड़ी सेना को भी साथ लेकर कृष्ण अपने अतिथियों का सम्मान करने आये। उन्होंने सब का सम्मान किया, उचित वस्त्र दिये, सब को संतोष दिया और कहा–"मैं और मेरे बन्धु हम सब आप ही के लोग हैं। आप जो भी चाहते हैं, पूछिये! हम इन्तजाम करेंगे।" वे सब कुछ दिन बिताकर वहाँ से चले गये।

एक बार अर्जुन धर्मराज से अनुमति लेकर कृष्ण को देखने आये और द्वारका में कुछ समय तक रहे। उसी समय कृष्ण ने एक यज्ञ प्रारंभ किया। यज्ञ के समय एक गाँव से कोई ब्राह्मण आया, दीक्षा में स्थित कृष्ण के सामने खड़े होकर विनय से बोला–"प्रभु! मेरी प्रार्थना सुनिये! मेरी पत्नी के प्रसव के होते ही शिशु को कोई उठा ले जा रहा है! इस तरह तीन बार हो चुका है। अब चौथी बार मेरी पत्नी गर्भवती है। प्रसव का समय निकट आया है। अब आप ही को हमारी रक्षा करनी है।"

ब्राह्मण की बातें सुनकर कृष्ण ने कहा–"जो भी आदमी रक्षा चाहता है, रक्षा करना मेरा कर्तव्य है। लेकिन मैं इस वक़्त यज्ञ की दीक्षा में हूँ। मैं यहाँ से हिल भी नहीं सकता। मेरी समझ में नहीं आता कि मैं क्या करूँ!"

कृष्ण की बातें सुनकर अर्जुन ने कहा–"आप क्यों चिन्ता करते हैं? मुझे भेज दीजिये। मैं इस ब्राह्मण के साथ जाकर उनकी तकलीफ़ को दूर करूँगा और आपको खुश करूँगा।"

कृष्ण ने हँसते हुए कहा–"यह काम तुम से बनेगा?"

ये बातें सुनकर अर्जुन को अपमान-सा लगा और उसने अपना सर झुका लिया।

यह देख कृष्ण ने फिर कहा—"कोई बात नहीं। अकेले न जाओ। बलराम, प्रद्युम्न, सात्यकि, कुछ यादव वीर और सेना को भी साथ ले जाओ। अपने बाहु-बल पर गर्व न करो।"

अर्जुन कई वीरों और सेना को भी साथ लेकर रथ में बैठकर ब्राह्मण के गाँव में पहुँचे।

इतने में सियारों की ध्वनि सुनाई दी। आसमान में सूरज की रोशनी कम होती गयी, लगा कि शाम हो रही है। बड़ी आवाज़ करते एक उल्का ज़मीन पर गिर गयी। उसी वक़्त ब्राह्मण की पत्नी को प्रसव-पीड़ा शुरू हुई। ब्राह्मण ने आकर यह बात कही—सभी वीर धनुष-बाण लेकर सौर के निकट पहुँचे।

आधी रात हो गयी। ब्राह्मण की पत्नी का शायद प्रसव हो गया। शिशु का रोना सुनाई दिया। इतने में औरतें 'ओह! चला गया, चला गया' चिल्लाने लगीं। शिशु के रोने की आवाज़ आसमान की ओर से सुनाई दी।

अर्जुन और बाकी वीरों ने आसमान को बाणों से भर दिया। लेकिन उनको कुछ दिखाई न दिया। एक बाण भी किसी को न लगा। सब लोग चकित हो खड़े ही रह गये।

बूढ़े और बूढ़ियों ने अर्जुन इत्यादि लोगों को खरी-खोटी सुनायी। ब्राह्मण ने अर्जुन के पास आके गुस्से में कहा—"कृष्ण के सामने बड़े वीर की तरह डींग मारी और शिशु को बचाने का भार अपने ऊपर ले आये। कृष्ण को छोड़ यह काम किसी से नहीं बनता, तुम से कैसे होगा? उनकी और तुम्हारी बराबरी कैसी? आगे कभी ऐसी डींग न मारो! बचाने आये, बचा न सके। इस प्रकार धर्म की हानि से जो पाप होगा, उसमें चौथा हिस्सा तुम्हें प्राप्त

को जोता और गरुडध्वजा को उठा ले आया। अर्जुन को रथ हाँकने का आदेश दे, कृष्ण रथ में सवार हुए और उत्तर दिशा की ओर रवाना हुए। रथ जंगल, पहाड़ तथा नदियों को पारकर समुद्र के किनारे जा पहुँचा।

समुद्र ने प्रत्यक्ष हो कृष्ण को अर्घ्य देकर पूछा–"महानुभाव! आपका क्या आदेश है?"

"कुछ नहीं, मेरे रथ को रास्ता दो।" कृष्ण ने कहा।

इसपर समुद्र ने कहा–"भगवन, मैं आपको रास्ता दूँ तो बाकी लोगों की दृष्टि में गिर न जाऊँ? आप ही ने तो न पारकर सकनेवाले के रूप में मेरी सृष्टि की?"

"मेरे साथ दूसरों की तुलना कैसी? मैं जो काम करता हूँ, वे दूसरे लोग कर सकते हैं? मेरे और एक ब्राह्मण के वास्ते तुमको रास्ता देना ही होगा! मेरे जाते ही फिर उस मार्ग को तुम बंद कर दो और पहले की तरह हो जाओ।" कृष्ण ने कहा।

समुद्र ने कृष्ण की बात मानकर रास्ता दिया। कृष्ण का रथ उत्तर की कुरुभूमियों

होगा! तुम्हारे गांडीव और पराक्रम बेकार हैं। अब विलंब न करो, वापस चले जाओ!"

ब्राह्मण तुरंत कृष्ण के पास लौट पड़ा। उसके पीछे अर्जुन आदि भी रवाना हुए। लज्जा से सर झुकाये अपने सामने खड़े अर्जुन को देख कृष्ण ने कहा–"इसमें दुखी होने की क्या बात है? इसका कारण कुछ और है। मैं तुमको फिर कभी सुनाऊँगा।" यह कहते दारुक को बुलाकर रथ तैयार रखने का आदेश दिया।

दारुक ने कृष्ण के रथ में शैब्य, सुग्रीव, मेघपुष्प और पलाहका नामक चार घोड़ों
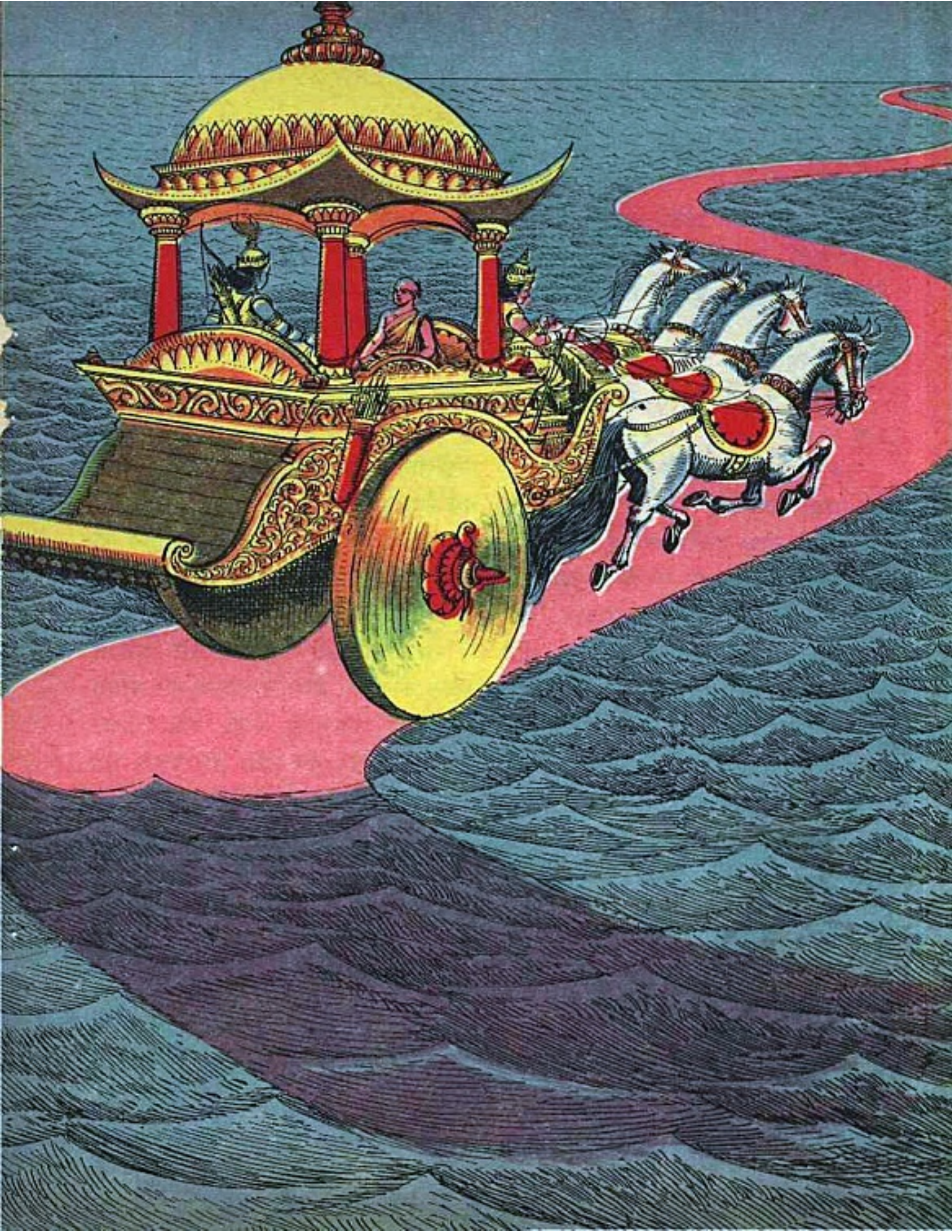
को पारकर गंधमादनपर्वत की ओर जाने लगा ।

उस वक़्त छे पर्वत—जयंत, वैजयंत, नील, श्वेत, इंद्रकूट और कैलास—विभिन्न रंगों की धातुओं से अलंकृत शरीरों से सामने आकर बोले—"भगवन, आपका कैसा आदेश है ?"

"मेरे रथ को रास्ता दो ।" कृष्ण ने कहा ।

तब उन पर्वतों ने झुककर कृष्ण के रथ को रास्ता दिया ।

मेघों के बीच चलनेवाले सूर्य की भांति कृष्ण का रथ पहाड़ों के बीच बहुत दूर गया । तब चारों ओर अंधकार फैल गया । इसे देख अर्जुन डर गया । घोड़े रुक गये । चारों तरफ़ पत्थर की तरह जमे अंधकार को कृष्ण ने अपने सुदर्शन चक्र से टुकड़े-टुकड़े कर अर्जुन से कहा— "रथ को आगे बढ़ाओ !"

बहुत दूर जाने पर एक जगह करोड़ों सूर्यों की इकट्ठी की हुई कांति-सी दिखाई दी । कृष्ण अर्जुन और उस ब्राह्मण की तरफ़ देख हँसते हुए रथ से उतरे और उस कांति में चलते आगे बढ़े ।

"यह रोशनी कैसी ? इसमें कृष्ण अकेले क्यों गये ? क्या होनेवाला है ?" यह सोचते अर्जुन और ब्राह्मण डरते ही रहे कि इतने में कृष्ण रोशनी में से वापस आये । उनके पीछे तीन ब्राह्मण कुमार थे । उनके हाथों में नये पैदा हुआ शिशु भी था ।

कृष्ण ने उन चारों बच्चों को ब्राह्मण को दिया । ब्राह्मण के आनंद और अर्जुन के आश्चर्य की कोई सीमा न थी !

रथ जिस रास्ते गया था, उसी रास्ते से वापस लौटा । कृष्ण ने ब्राह्मण को भोजन दिलाया । धन-धान्य आदि उपहार देकर बड़े प्रेम से घर भेज दिया और इसके बाद नियमपूर्वक अपने यज्ञ की पूर्ति की ।

अरण्य पुराण

[२४]

मौवली ने चारों तरफ़ दृष्टि दौड़ायी और ज़मीन पर चमकनेवाली वस्तु को मुट्ठी में भरकर ऊपर उठाया ।

"ओहो, मानव समाज के खेल में काम देनेवाली चीज़ जैसी लगती है । यह पीली है, वे गेहुवे रंग की थीं । बस, यही फ़रक है ।" यह कहते उसने सोने के टुकड़े को नीचे गिराया । उस अंधेरी कोठरी में कुछ फुटों के नीचे सोने-चाँदी के सिक्के हैं । उनमें आधे डूबे हाथी के हौदे हैं । वे सोने से बनाये गये हैं जिनमें रत्न बिठाये गये हैं । राजाओं की पालकियाँ हैं, उनपर चाँदी की नक्काशी की गयी है ।

सफ़ेद फन का कहना सत्य है । इस निधि का मूल्य लगाना नामुमकिन है । कई शताब्दियों तक युद्धों के ज़रिये, वसूल किया गया है, लूटा हुआ माल है । व्यापार और 'कर' के द्वारा वसूली गयी निधि है ।

लेकिन उनका मूल्य मौवली को बिलकुल पता न था । तलवारों पर उसका ध्यान गया । लेकिन अपनी कटार जैसा 'मूठ' उसमें न था, इसलिए उसको भी गिरा दिया । आखिर उसकी दृष्टि एक अंकुश पर पड़ी । उसके मूठ के अंत में एक गोलाकार का बड़ा पन्ना चमक रहा था । उसके नीचे आठ इंच तक नील रत्न बिठाये गये थे । वे पकड़ने के अनुकूल भी हैं । बाक़ी मूठ हाथी दांत का बनाया हुआ है । उसके आखिर में जो कांटा और चिटकनी है, वे फ़ौलाद की बनी हैं । उन पर सोने का मुलम्मा चढ़ा है । हाथी के चित्र अंकित हैं । चित्रों ने मौवली को आकर्षित किया । हाथी की याद हो आयी ।

मौवली का यह काम बड़े ध्यान से देखते सफ़ेद फन बोला–"यह सब अपनी आँखों से देखने का मौक़ा दिया, इसके लिए तुम अपनी जान की बलि दोगे तो क्या हुआ? मैंने तुम्हारा उपकार किया है न?"

"मेरी समझ में कुछ नहीं आ रहा है। ये सब कड़े और ठण्ड़े हैं। लेकिन यह चीज़ अच्छी है। इसे ले जाकर धूप में देखना है।" यह कहते अंकुश उठा कर दिखाते हुए मौवली बोला–"यह सब तुम्हारे ही हैं? क्या इसे मुझे दोगे? खाने के लिए तुमको मेंढकें ला दूंगा।"

सफ़ेद फन कपट-स्वभाव से बोला–"ज़रूर दूंगा। यहाँ से जाने तक ही!"

"मैं अब जा रहा हूँ। यह जगह अंधेरी है! सर्दी भी लगती है, यहाँ! इस अंकुश को अरण्य में ले जाऊँगा।" मौवली ने कहा।

"देखो, तुम्हारे पैर के पास क्या है।" सफ़ेद फन ने कहा।

मौवली ने एक मनुष्य का कपाल ऊपर उठा कर कहा–"यह मनुष्य का कपाल है। वहाँ पर और दो हैं।"

"वे कुछ साल पहले इस निधि को उठा ले जाने को आये थे। अंधेरे में ही मैंने उनका परामर्श किया। इसके बाद वे यहाँ से हिले नहीं।" सफ़ेद फन ने कहा।

"निधि की बात कहते हो। उस खज़ाने को लेकर मैं क्या करूंगा? मुझे केवल यह अंकुश चाहिये। अगर इसे दोगे तो शिकार होगा, नहीं तो भी शिकार चलेगा। मैं ज़हरीले प्राणियों से नहीं लड़ता। तुम्हारे बंधुओं के पास मैंने अभय मंत्र भी सीखा है।" मौवली ने कहा।

"यहाँ पर अभय मंत्र केवल मेरे अकेले का ही चलेगा।" सफ़ेद फन ने कहा।

काबा की आँखें शोलों की तरह प्रज्वलित हुईं। उसने आगे कूदकर फुफकारते हुए पूछा—"मनुष्य को लाने को किसने कहा?"

"मैंने ही कहा था। मनुष्य को देख एक जमाना हो गया था। यह आदमी साँपों की भाषा भी बोलता है।" सफ़ेद फन ने कहा।

"लेकिन उस वक़्त मारने की बात न थी। क्या मैं अकेले अरण्य में जाकर लोगों से यह कहूँ कि मौवली को मौत के मुँह में भेज आया हूँ?" काबा ने पूछा।

सफ़ेद फन घमण्ड से बोला—"मारने की बात पहले ही कहने की मेरी आदत नहीं है। तुम यहाँ से जाओ या रहो, दीवार में सुरंग है ही। बंदरों को मारनेवाले, ज्यादा बकवास न करो। मैं तुम्हारी गर्दन छू लूँ, बस! भस्म हो जाओगे। यहाँ जो भी आया, जान से वापस न लौटा। आज तक ऐसा न हुआ। मैं नगर राजा की निधि का रक्षक हूं।"

"अरे, सूखे अंधेरे के कीड़े! मैं फिर बता देता हूँ, सुनो। तुम्हारे राजा नहीं.

नगर भी नहीं हैं। हमारे चारों तरफ़ केवल अरण्य है।" काबा बोला।

"निधि तो है न। एक काम करेंगे। युवक को दौड़ने को कहो और तुम तमाशा देखो—काबा, ऐ युवक, तुम इधर-उधर दौड़ो। खेलेंगे।" सफ़ेद फन बोला।

काबा के सर पर मौवली ने हाथ रख कर कान में कहा—"इस सफ़ेद फन को अब तक मानवों की भीड़ का समाचार मालूम है। मेरे बारे में नहीं जानता। शिकार चाहता है वह, देंगे, खुशी से।"

मौवली ने अपने हाथ का अंकुश झट सफ़ेद फन की गर्दन पर फेंक दिया। उसके बोझ के नीचे दब कर सफ़ेद फन हिल-डुल न पाया। मरोड़ खानेवाले सफ़ेद फन के शरीर पर काबा कूद पड़ा और चिल्ला उठा—"मार डालो।"

मौवली का हाथ अनायास कटार पर पड़ा। "नहीं मारूँगा, भूख के वक़्त ही मारूँगा, बाक़ी समय कभी नहीं।" यह कहते मौवली ने सफ़ेद फन की गर्दन पकड़ कर उसका मुँह कटार से चीर डाला। फिर कहा—"काबा, इसका छाल देखो। सफ़ेद फन के झबड़ों में भयंकर ज़हर की थैलियाँ हैं, लेकिन उसके झबड़े काले पड़ गये हैं। उनमें ज़हर सूख गया है।"

मौवली सफ़ेद फन की गर्दन पर से अंकुश उठा कर, उसकी गर्दन को ढीला करते बोला—"राजा के खज़ाने की रक्षा करने के लिए नया रक्षक चाहिये। सफ़ेद फन, तुमने बुरा काम किया। इधर-उधर दौड़कर खेलो।"

"इस अपमान को सहन नहीं कर सकता। मुझे मार डालो।" सफ़ेद फन ने कहा।

"तुमको मारने से रह गया। यह अंकुश मैं ले जाता हूँ। मैंने तुमको हरा दिया न?" मौवली ने कहा।

"उससे तुम्हारी मौत न हो, देखो, याद रखो, वह मौत है। मेरे नगर में रहनेवाले हर एक की मौत के लिए ज़रूरी मौत उसमें है। वह बहुत दिन तक तुम्हारे हाथ में भी वह न रहेगा। जंगली आदमी! तुमसे छीननेवाले के हाथ में भी वह न रहेगा। उसके लिए कई हत्याएँ होंगी। मेरी ताक़त जवाब दे चुकी है। अब मुझे जो काम करना है, वह अंकुश ही करेगा। वह मौत है। मौत। मौत!" सफ़ेद फन ने कहा।

७८. मुस्तांग पर्वत की गुफाएँ

मुस्तांग नामक देश नेपाल के उत्तर में है। सिर्फ़ ७५० वर्गमील में फैले इस राज्य के एक राजा है। वहाँ पर अनेक जगहों में पहाड़ों में इस तरह की गुफाएँ खुदी हुई हैं। हमें नहीं मालूम है कि किन लोगों ने इनको खोदा है। उन गुफाओं पर चढ़ना है तो हमें साधनों की जरूरत होती है।

Photo by Vidya Chandra Patwa
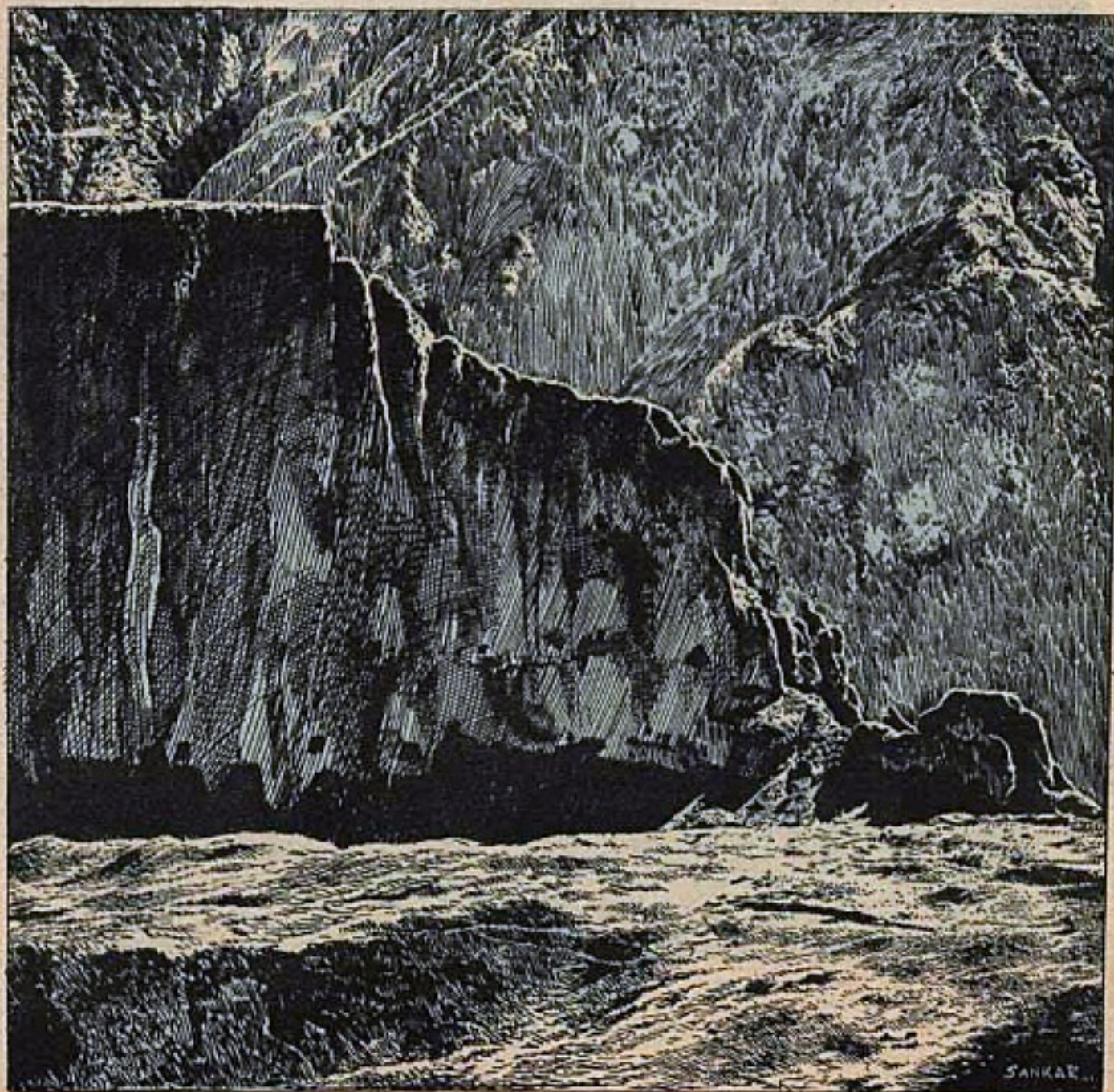
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

प्रीत न जाने रीत!

प्रेषिका :
कु. लखीरानी-जेमशेदपूर

Photo by Anant Desai
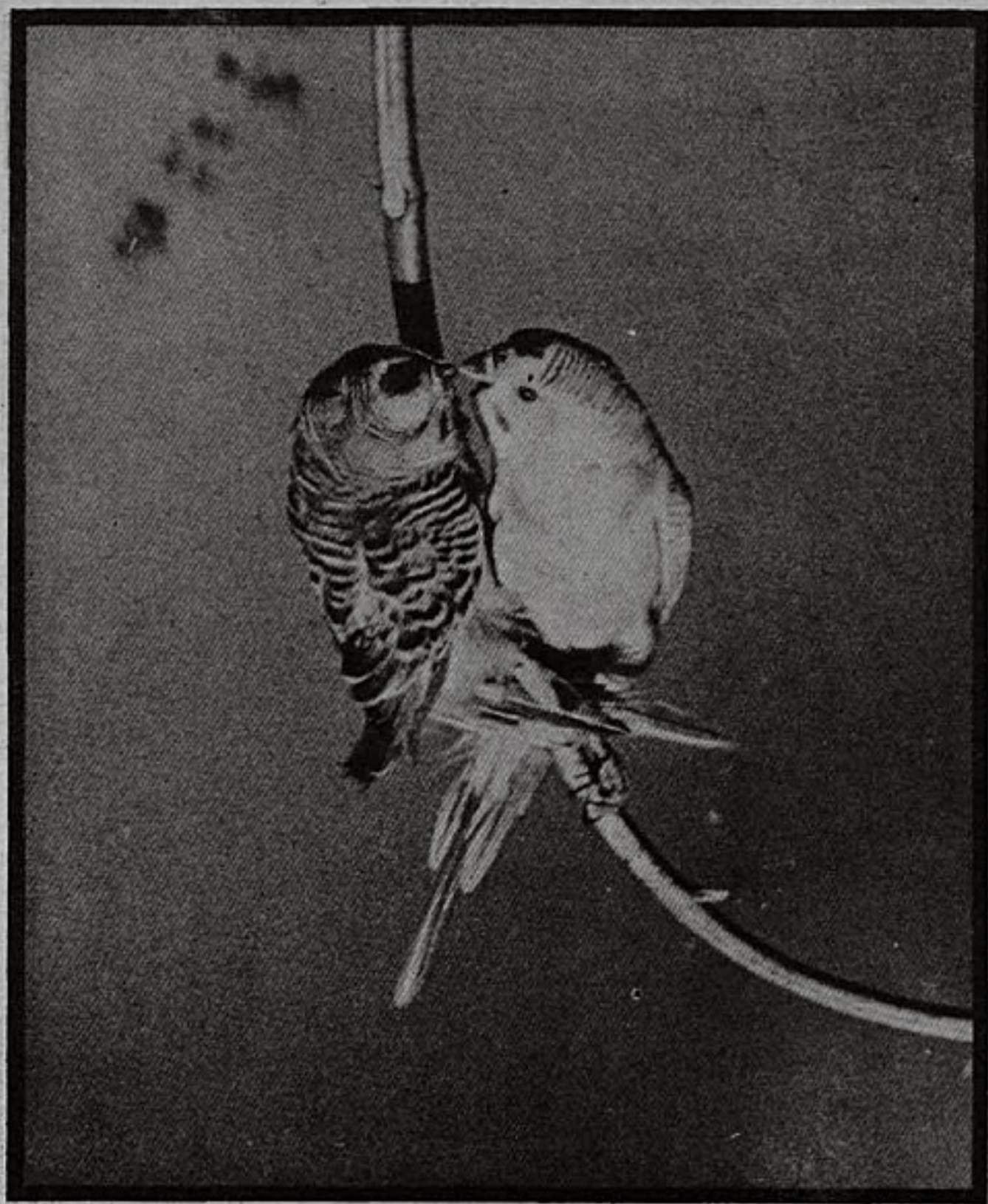
पुरस्कृत
परिचयोक्ति

मीत न भूलें प्रीत!!

प्रेषिका :
कु. लखीरानी-जेमशेदपूर

फ़ोटो - परिचयोक्ति - प्रतियोगिता

अगस्त १९६८ :: पारितोषिक १०)

कृपया परिचयोक्तियाँ कार्ड पर ही भेजें !

ऊपर के फ़ोटो के लिए उपयुक्त परिचयोक्तियाँ चाहिए। परिचयोक्तियाँ दो तीन शब्द की हों और परस्पर संबन्धित हों। परिचयोक्तियाँ पूरे नाम और पते के साथ कार्ड पर ही लिखकर निम्नलिखित पते पर तारीख ७ जून १९६८ के अन्दर भेजनी चाहिए।

फ़ोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता
चन्दामामा प्रकाशन,
वड़पलनी, मद्रास-२६

जून - प्रतियोगिता - फल

जून के फ़ोटो के लिए निम्नलिखित परिचयोक्तियाँ चुनी गई हैं।

इनकी प्रेषिका को १० रुपये का पुरस्कार मिलेगा।

पहिला फ़ोटो: प्रीत न जाने रीत!

दूसरा फ़ोटो: मीत न भूलें प्रीत !!

प्रेषिका: कुमारी लखीरानी,

१, रो. नं. १२, एल ४, खितपोरा, जेमशेदपुर-९

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Sarada Binding Works, 2 & 3, Arcot Road, Madras-26. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'